सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

चौदहवाँ अंक

धर्मपद

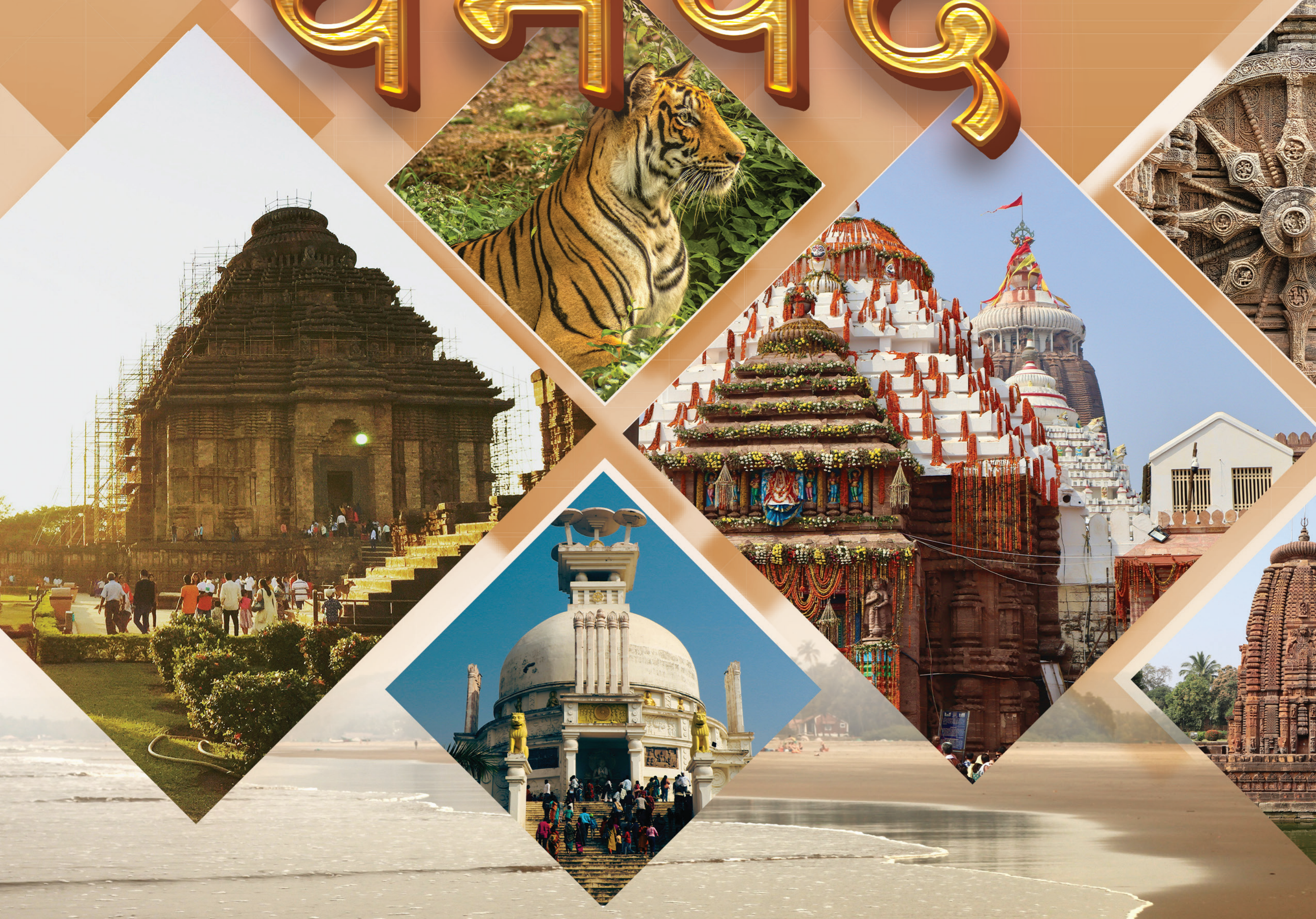

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर - 751017(ओडिशा)

‘धर्मपद’ के 13वें अंक का विमोचन

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

धर्मपद

वर्ष 2025-26 (प्रथम छमाही)

अंक 14

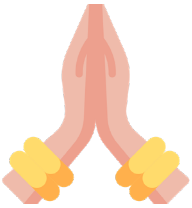

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, उत्तर खंड, रेल सदन
सामंत विहार, चंद्रशेखरपुर
भुवनेश्वर - 751017 (ओडिशा)

मूल्य- राजभाषा के प्रति निष्ठा

धर्मपद पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्री अनूप फ्रांसिस डुंगडुंग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

संपादक

सुश्री कीर्ति श्री
सहायक निदेशक (राजभाषा)

उपसंपादक

श्री सूरज कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

विशेष सहयोग

श्री शशि रंजन
सचिव, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन, भुवनेश्वर-751017
ई मेल : pdarlyecoastr@cag.gov.In
दूरभाष : 0674- 2301045

संरक्षक का संदेश

यह बड़े हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'धर्मपद' का 14वां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। हिंदी गृह पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की ओर एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

हमारा देश भाषायी दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है, जहाँ कई भारतीय भाषाओं का प्राचीन इतिहास रहा है। भाषिक विविधता होने के बावजूद सभी को एकता के सूत्र में पिरोने का काम 'हिंदी' भाषा करती है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ-साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों को आत्मसात किया है। यही कारण है कि हिंदी राजभाषा के रूप में सुशोभित है।

हमारा कार्यालय राजभाषा नीतियों पर अमल करने में अग्रसर है एवं राजभाषा के प्रति पूर्ण निष्ठा के साथ प्रयासरत भी है। राजभाषा के प्रसार की दिशा में हमारा समर्पण पत्रिका में समाहित सभी आलेखों एवं रचनाओं में अभिव्यक्त होता है। यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ ज्ञान एवं विचारों के आदान-प्रदान के मंच के रूप में कार्य करती है।

यह पत्रिका निरंतर प्रकाशित होते रहे यही मेरी शुभकामना है। सम्पादक मंडल को पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु एवं रचनाकारों को राजभाषा हिंदी के प्रति अतुलनीय निष्ठा हेतु हृदय से धन्यवाद देता हूं।

(श्री अनूप फ्रांसिस डुंगडुंग)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, पूर्व तट रेलवे

संपादकीय

राजभाषा हिंदी की सेवा एवं उसके प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित इस कार्यालय की पत्रिका 'धर्मपद' के 14वें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। वास्तव में यह पत्रिका इस कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों के सक्रिय रचनात्मक सहयोग का ही प्रतिफल है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें कविताएँ, कहानियाँ, तथा वर्तमान के ज्वलंत विषयों के लेखों की बहुलता हैं, जो विशेष तौर पर पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के विकास में इस कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जोड़ कर रखता है।

हिंदी भाषा हमारे देश की समृद्ध संस्कृति एवं संस्कारों का प्रतिबिम्ब है। अतः राजभाषा हिंदी के प्रति सम्मान एवं श्रद्धा व्यक्त करना हम सभी का राष्ट्रीय दायित्व है। राजभाषा हिंदी के व्यापक स्तर पर विकास एवं प्रचार-प्रसार हेतु, कार्यालयीन हिंदी पत्रिका के माध्यम से कार्यालय स्तर पर कार्मिकों के विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया जाना उचित है।

मैं पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी कार्मिकों को हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ, जिनके सहयोग से 'धर्मपद' पत्रिका का प्रकाशन संभव हो सका है। पत्रिका के आगामी अंकों के लिए भी आप सभी के सहयोग की अभिलाषी हूँ।

हिंदी के प्रति हमारा लगाव एवं साहित्य के प्रति रुचि के फलस्वरूप "धर्मपद" को आसान और रोचक एवं तथ्यपरक रूप से संवारने की हमारी कोशिश में और अधिक निखार लाने हेतु आपके सुझाव एवं मार्गदर्शन अपेक्षित हैं।

सधन्यवाद,

कीर्ति

(सुश्री कीर्ति श्री)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ
1	धर्मपद की यात्रा	श्री विभाष चंद्र	1
2	भारतीय संस्कृति	श्री विक्रांत आनंद	3
3	आरंभ या अंत ?	श्री चंदन कुमार	5
4	सूरज और चाँदनी- एक अनकहा संगम	सुश्री अनुष्का चौबे	7
5	AI से समाचार सूचना में प्रभाव	श्री अरबिन्द शतपथी	8
6	गृहिणी - एक अदृश्य योद्धा की कहानी	श्रीमती नीतू चंद्रा	10
7	पहली यात्रा	श्रीमती पूजा कुमारी	13
8	सुंदरता ही चरित्र है	श्रीमती डी. सुधा कल्याणी	14
9	सिमलीपाल की यात्रा	श्री मानस रंजन जेना	15
10	तुम मेरी कविता हो	सुश्री सौमि बिस्वास	21
11	बिरसा मुंडा अंतर्राष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम-राउरकेला	श्री गोबिन्द दीप	22
12	एक पेड़ की कहानी	सुश्री हर्षिता साहु	24
13	जगदलपुर- पूर्व तट रेलवे का एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल	श्री सुदीप कुमार बिस्वास	25
14	झील के किनारे लालटेन	सुश्री ऐश्वर्या परिडा	27
15	शीतल षष्ठी: संबलपुर का प्रमुख त्योहार	श्री प्रशांत कुमार मेहर	28
16	साथी	श्रीमती माधुरी हालदार	29
17	तृप्ति	श्री मिन्टू हालदार	30
18	जिज्ञासु लड़की	श्री निरंजन परिडा	31
19	वो जो लौटकर नहीं आया	सुश्री श्रद्धा राउत	32
20	इंस्टालेशन	श्री सूरज कुमार	34
21	वक्त है देश के लिए कुछ करने का	श्रीमती सुषमा चौबे	38
22	अधूरी तस्वीर	सुश्री स्वागतिका साहू	39
23	शादी	श्रीमती रोमा कुमारी	41
24	चाँदनी गली की कहानियाँ	सुश्री सागरिका साहु	44
25	ए.आई.	श्रीमती दीप्तिमयी साहु	46

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से: प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

धर्मपद की यात्रा

श्री विभाष चंद्र
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

मैंने वर्ष 2011 में प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, पूर्व तट रेलवे में सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। कार्यभार ग्रहण करने के बाद मुझे सहायक राजभाषा अधिकारी का अतिरिक्त दायित्व दिया गया। उस समय श्री बी.के. मोहंती प्रधान निदेशक थे जबकि श्री पी.के. दास निदेशक। श्री बी.के. राव राजभाषा अधिकारी के अतिरिक्त दायित्व का भी निर्वहन कर रहे थे।

उस समय हमारे कार्यालय से हिंदी पत्रिका प्रकाशित नहीं होती थी। हमारे प्रधान निदेशक श्री बी.के. मोहंती चाहते थे कि 2012 में हिंदी पत्रिका प्रकाशित की जाए और आगे भी इसे जारी रखा जाए। उनका मानना था कि इससे हिंदी को बढ़ावा मिलता है, कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कुछ रचनात्मक लिखने का अवसर प्राप्त होता है और उससे भी बढ़कर पत्रिका कार्यालय की पहचान होती है। अतः वह किसी भी कीमत पर हिंदी में वार्षिक पत्रिका प्रकाशित करवाना चाहते थे। चूँकि मैं हिंदी भाषी था, अतः मुझे पत्रिका के लिए कार्यालय के कर्मचारी एवं अधिकारियों से आवश्यक रचनाएं आमंत्रित करने एवं इसका संपादन करने में मदद करने को कहा गया।

इसके बाद मैंने रचनाएं आमंत्रित करना शुरू किया। तकरीबन 32-33 रचनाएं हमें मिली। चूँकि हमारे कार्यालय में ज्यादातर अधिकारी-कर्मचारी ओडिया भाषी थे अतः जो रचनाएं हमें हिंदी में मिली, उसमें काफी सुधार करने की जरूरत पड़ी। परंतु कार्यालय के सभी लोगों में एक उत्साह का माहौल था कि हमारे कार्यालय की अपनी वार्षिक पत्रिका का इसबार हिंदी पखवाड़ा के समय विमोचन हो जाएगा। अतः मैंने भी काफी जोश के साथ अपना दायित्व निभाया। रचना सामग्री प्रारूपण के कार्य को मैंने अंजाम दिया। उसी वक्त हिंदी अनुवादक श्री यशवंत वर्मा एवं डी.ई.ओ. श्री राजू कुमार ने इस कार्यालय में कार्यभार संभाला था। संकलन करने का कार्य श्री यशवंत वर्मा को दिया गया और पत्रिका के आवरण सज्जा का कार्य श्री राजू कुमार को। सब कुछ तैयार किया जा रहा था लेकिन पत्रिका किस नाम से प्रकाशित की जाए इसपर सहमति नहीं बन पा रही थी। तभी उस समय के वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन श्री आलेखा चरण त्रिपाठी ने पत्रिका के नाम के लिए 'धर्मपद' का सुझाव दिया। उनके अनुसार 'धर्मपद' नाम चुनने का कारण यह था कि धर्मपद सिर्फ एक नाम ही नहीं अपितु एक ऐसा चरित्र था जो पुरातन उड़ीसा (उत्कल) के उस समय को दर्शाता है, जब कलिंग स्थापत्य कला अपने शिखर पर थी। धर्मपद कलात्मकता, त्याग और आत्मोसर्ग का एक अविस्मरणीय मिश्रित प्रतीक था। धर्मपद कोणार्क मंदिर बनाने वाले प्राचीन कारीगर विभु महाराणा का पुत्र था और 12 साल की कम उम्र में 1200 कारीगरों के प्राणों की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग कर दिया था लेकिन उससे पहले उसने असामान्य साहस एवं सामर्थ्य दिखाते हुए कोणार्क मंदिर चूड़ा पर शीर्ष पत्थर

स्थापित कर दिया था। यह नाम सबको पसंद आया और कार्यालय की वार्षिक पत्रिका का नाम 'धर्मपद' रखने का निर्णय लिया गया।

पत्रिका का मसौदा तैयार हो जाने के बाद मैं श्री यशवंत वर्मा और निदेशक महोदय, प्रधान निदेशक महोदय से मिलने गए। उन्होंने कुछ सुधार करने के अलावा यह निर्देश दिया कि राजभाषा पखवाड़ा से पहले पत्रिका प्रकाशित होकर कार्यालय में आ जानी चाहिए। काफी भाग-दौड़कर प्रकाशक से हमने अनुरोध किया कि 15 सितंबर से पहले कृपया पत्रिका की प्रति हमें उपलब्ध करा दें। 2012 में राजभाषा हिंदी पखवाड़ा को काफी उत्साह के साथ मनाने के लिए सारे प्रयास किए गए थे। सेवानिवृत वरिष्ठ लेखापरीक्षक श्री अशोक राय के प्रयत्नों के फलस्वरुप कार्यालय के कर्मचारी एवं अधिकारियों ने हिंदी राजभाषा पखवाड़ा के आखिरी दिन नाटक मंचन का कार्यक्रम भी रखा था। बहुत जल्द ही राजभाषा हिंदी पखवाड़ा शुरु हो गया और देखते ही देखते समापन समारोह का वक्त भी आ गया।

डॉ अनीता मिश्रा 2012 के हमारे राजभाषा हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह की मुख्य अतिथि थीं। मैं आज भी 2012 में हुए राजभाषा समापन समारोह को भूल नहीं पाया हूं। जब प्रधान निदेशक महोदय, निदेशक महोदय एवं मुख्य अतिथि ने हमारे कार्यालय की वार्षिक पत्रिका 'धर्मपद' के प्रथम अंक का विमोचन किया तो वह अविस्मरणीय पल था। कार्यालय के सभी कर्मचारियों-अधिकारियों की मेहनत के अलावा राजभाषा अनुभाग का विशेष प्रयास और सबसे बढ़कर प्रधान निदेशक एवं निदेशक महोदय के निरंतर मार्गदर्शन की वजह से यह सब संभव हो सका था।

2012 के बाद से कार्यालय में हिंदी राजभाषा के लिए कई कार्य किए गए, जैसे हिंदीतर भाषियों के लिए प्रशिक्षण, कार्यशाला का आयोजन, कार्यालय में सभी नामपट्टों को द्विभाषी करना इत्यादि।

आज राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, पूर्व तट रेलवे ने उल्लेखनीय कार्य किया है। हिंदी लिखने एवं बोलने वालों की संख्या बढ़ी है। 'ग' क्षेत्र होते हुए भी यह कार्यालय हिंदी के विकास में अच्छा योगदान दे रहा है। वर्तमान में राजभाषा अनुभाग राजभाषा के प्रोत्साहन देने के लिए निरंतर प्रयासरत है और उसे प्रशासन अनुभाग का सहयोग एवं निदेशक, प्रधान निदेशक महोदय का लगातार मार्गदर्शन भी मिल रहा है। 'धर्मपद' अब अपने 14वें अंक के विमोचन के लिए तैयार है, यह मेरे लिए काफी सुखद एवं संतोषप्रद है। मैं आशा करता हूं कि यह पत्रिका एक दिन अपने 100वें अंक के विमोचन के साथ भी हम सबके सम्मुख आएगी।

"राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है"

-महात्मा गांधी

भारतीय संस्कृति

श्री विक्रांत आनंद
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता का देश है, जिसमें शिष्टाचार, तहजीब, सभ्य संवाद, धार्मिक संस्कार, मान्यताएं आदि हैं, जो देश को एकजुट और मजबूत बनाये रखते हैं। इस देश में सभी, चाहे छोटे हों या बड़े, सब एक-दूसरे के साथ शिष्टाचार और तहजीब से पेश आते हैं। सभी एक-दूसरे का सम्मान करते हैं। भारत देश की पुरानी संस्कृति में शिष्टाचार की जो परिभाषा थी, आज आधुनिक युग में भी भी वही है। यह देश आज भी वही संस्कृति अपनाए हुए है और अपनी आने वाली पीढ़ी को वही सिखा रहा है। यही कारण है कि यहाँ अभी भी वृद्धाश्रम नहीं के बराबर हैं। इस देश में लोग पूरे परिवार के साथ रहना ज्यादा पसंद करते हैं, जिससे बच्चों का विकास भी अच्छे से होता है और शिष्टाचार भी सीखते हैं।

भारत के लोग सभ्य होते हैं, चाहें वो भारत के उत्तर में रहने वाले हों या दक्षिण के। भारत में पश्चिमी संस्कृति अभी हावी नहीं हुई हैं। भारत के लोग विदेश में भी भारतीय संस्कृति को ही अपनाये रहते हैं। आजकल तो विदेश के लोग भी भारतीय संस्कृति को अपना रहे हैं और बहुत खुश भी हैं।

भारत की राष्ट्रीय भाषा हिंदी है। हालाँकि विभिन्न राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में लगभग 22 आधिकारिक भाषाएँ बोली जाती हैं। उत्तर भारत में ज्यादातर हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं और जैसे-जैसे दक्षिण की ओर बढ़ेंगे भाषा अलग-अलग मिलेगी। इस देश में एक कहावत है कि ”हर एक मील के बाद बोली बदल जाती है।“ कहने का मतलब यह है कि हर एक मील पर वहाँ के रहने वालों की बोली एवं पहनावे अलग होते हैं मगर इससे कोई असहज महसूस नहीं करता। सभी लोग एक-दूसरे का सम्मान करते हैं और ख़ुश-ख़ुशी रहते हैं। ये हमारी संस्कृति है, जो सभी को बांधे हुए है।

देश में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन और यहूदी, सभी धर्मो के लोग हैं। हर भारत के राज्य में सभी धर्मो के लोग रहते हैं और साथ-साथ रहते हैं। यहाँ तक कि गाँव में भी सभी धर्मो के लोग मिल

जायेंगे और सब मिलजुल के रहते हैं और एक-दूसरे का साथ भी देते हैं और सभी धर्मो के लोग अपने धर्म के अनुसार मान्यताओं, रीति रिवाज़ों और परम्पराओं का पालन करते हैं। यहाँ लोग सामाजिक कार्यक्रमों सहित राष्ट्रीय उत्सवों को एक साथ मनाते हैं, जैसे गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस आदि। इसमें किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं रहता है, यही हमारी संस्कृति है।

कुछ उत्सव जैसे बुद्ध पूर्णिमा, महावीर जयंती, गुरु पर्व आदि कई धर्म के लोगों द्वारा एकसाथ मनाए जाते हैं। यहाँ के नृत्य, संगीत, कला, हस्तशिल्प, वेशभूषा इत्यादि सभी में हम भारतीय संस्कृति की झलक देख सकतें हैं।

आजकल पश्चिमी देश के लोग भी भारतीय संस्कृति को अपना रहे हैं और बहुत अच्छा महसूस कर रहे हैं। भारतीय संस्कृति बहुत अपनत्व से भरी और आसानी से अपनाने योग्य है। भारतीय लोग भी सभी को परिवार के रूप में अपनाते हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम' ही भारत की परंपरा है। भारत में सभी श्रेणी के लोग चाहे अमीर हों, मध्यम वर्ग या अन्य लोग, वे सभी भारत में खुशी से एक साथ रहते हैं और एक-दूसरे का समर्थन करते हैं। भारतीय संविधान में अनुच्छेद 14 से अनुच्छेद 35 तक मौलिक नियम हैं, जिसमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, समानता, धर्म, सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार, शोषण के खिलाफ स्वतंत्रता आदि के अधिकार दिए गए हैं, जो हर नागरिक को समान बनाता है। यही वह चीज है जो हमारी संस्कृति को अद्वितीय बनाती है और एक साथ लाती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51ए में 11 मौलिक कर्तव्य भी निर्धारित हैं। ये कर्तव्य नागरिकों की राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारियों पर जोर देते हैं और मौलिक अधिकारों के पूरक हैं। 42वें और 86वें संशोधन द्वारा जोड़े गए ये कर्तव्य नैतिक दायित्व हैं जिनका उद्देश्य देशभक्ति और एकता को बढ़ावा देना है।

हमारा देश बहुत सारे महान लोगों की जन्मस्थली है जैसे महात्मा गाँधी, सुभाष चन्द्र बोस, चंद्रशेखर आजाद, स्वामी विवेकानंद, वल्लभभाई पटेल, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आदि। भारत महात्मा गाँधी की भूमि है, जहाँ उन्होनें लोगों में अहिंसा की संस्कृति पल्लवित की। स्वामी विवेकानंद को व्यापक रूप से सबसे महान आधुनिक भारतीय विचारकों में से एक माना जाता है। वे एक प्रमुख दार्शनिक, समाज सुधारक और विदेशों में वेदांत दर्शन के सबसे सफल प्रचारक थे। वल्लभभाई पटेल को भारत में एकता का जनक कहा जाता है। उन्होंने कई प्रांतों को भारत में जोड़ा और परिणामस्वरूप भारत एकीकृत हुआ। भारत भाषा, जाति और धर्म की विविधता का नहीं हैं बल्कि आंतरिक एकता का देश हैं, जहाँ विविध संस्कृति, भाषा, बोली वेश-भूषा आदि हैं, फिर भी सबका दिल है हिदुस्तानी।

किसी ने सही कहा है :-

"जब दुनिया में संस्कारों/ संस्कृति की परिभाषा लिखी जाएगी तो मेरे देश की तस्वीर ही नजर में आएगी"

आरंभ या अंत ?

श्री चंदन कुमार
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

जब हम जीवन की ओर देखते हैं, तो अक्सर यह समझ नहीं आता कि हम किस मोड़ पर खड़े हैं – क्या यह किसी यात्रा की शुरुआत है या किसी अध्याय का समापन? यह प्रश्न जितना दार्शनिक है, उतना ही वास्तविक भी। मेरे ख्याल से यह एक ऐसी नदी है जो निरंतर बहती रहती है, कभी शांत तो कभी उग्र।

जीवन का प्रारंभ: जन्म से यात्रा की शुरुआत

जीवन की शुरुआत हमारे जन्म से होती है। जब एक शिशु इस संसार में आता है, तो वह एक कोरे कागज़ की तरह होता है – न कोई ज्ञान, न कोई अनुभव, केवल संभावनाएँ।

बचपन वह अवस्था है जहाँ हम धीरे-धीरे इस संसार को समझना शुरू करते हैं। माता-पिता, शिक्षक और समाज हमें आकार देते हैं। हम बोलना, चलना, समझना और महसूस करना सीखते हैं। यह वह समय है जब जीवन हमें पहली बार चुनौतियों की ओर धकेलता है – स्कूल जाना, पढ़ाई करना, दोस्त बनाना और अपने अस्तित्व को पहचानना।

शिक्षा और करियर: आरंभ की निरंतरता

जब हम शिक्षा की ओर बढ़ते हैं तो जीवन एक नई दिशा लेता है। दसवीं की परीक्षा, बारहवीं की तैयारी, कॉलेज का चयन – हर पड़ाव एक नई चुनौती बनकर सामने आता है। हम सोचते हैं कि अगर यह चरण पार कर लिया तो जीवन सरल हो जाएगा लेकिन हर बार एक नया लक्ष्य सामने आ जाता है।

करियर की शुरुआत एक और बड़ा मोड़ होता है। नौकरी लगना एक उपलब्धि लगती है लेकिन इसके साथ आती हैं- जिम्मेदारियाँ, अपेक्षाएँ और एक नई दौड़। हम अपने सपनों को साकार करने की कोशिश करते हैं लेकिन साथ ही समाज, परिवार और स्वयं की अपेक्षाओं से जूझते हैं।

यह वह समय है जब हम जीवन को एक लक्ष्य आधारित यात्रा समझते हैं – लेकिन धीरे-धीरे यह स्पष्ट होता है कि लक्ष्य केवल पड़ाव हैं, जीवन की मंज़िल नहीं।

विवाह और परिवार: जीवन का विस्तार

विवाह और परिवार जीवन को एक नई दिशा देते हैं। यह वह समय है जब हम केवल अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए जीना शुरू करते हैं। जीवन अब एक साझेदारी बन जाता है, भावनाओं, जिम्मेदारियों और सपनों की साझेदारी।

बच्चों की परवरिश, घर की देखभाल, रिश्तों की जटिलता – यह सब जीवन को और गहराई देते हैं। हम सोचते हैं कि अब शायद विश्राम मिलेगा लेकिन जीवन फिर से हमें पुकारता है, एक नई भूमिका, एक नई चुनौती के साथ।

यह चरण हमें सिखाता है कि जीवन केवल व्यक्तिगत नहीं बल्कि सामूहिक भी है। हम दूसरों के जीवन में भी एक भूमिका निभाते हैं – मार्गदर्शक, संरक्षक और साथी।

वृद्धावस्था: चिंतन और पुनरावलोकन

जब हम वृद्धावस्था की ओर बढ़ते हैं तो जीवन के प्रति एक नया दृष्टिकोण पाते हैं। हम पीछे मुड़कर देखते हैं – बचपन, शिक्षा, करियर, परिवार – और सोचते हैं कि कितनी बार लगा कि अब सब खत्म हो गया लेकिन हर बार जीवन ने हमें एक नई जिम्मेदारी सौंप दी।

वृद्धावस्था केवल शारीरिक परिवर्तन नहीं बल्कि मानसिक परिपक्वता का समय है। यह वह समय है जब हम जीवन को समग्र रूप से समझते हैं – उसकी गति, उसकी गहराई, और उसका सौंदर्य।

यह चरण हमें यह सिखाता है कि जीवन कभी रुकता नहीं। जब तक चेतना है, तब तक जीवन है। हम यह भी बोल सकते हैं कि यह एक ऐसा चक्र है, जहाँ हर अंत एक नए आरंभ की भूमिका का दीप जलाता है। हम सोचते हैं कि मंज़िल मिल गई लेकिन वह मंज़िल एक नए सफर की शुरुआत बन जाती है।

जीवन को एक रेखा नहीं बल्कि एक वृत्त की तरह देखिए। जहाँ हर मोड़ पर एक नई शुरुआत है। जहाँ ठहराव केवल भ्रम है और गति ही जीवन का सत्य है। जीवन का सौंदर्य इसी में है कि वह कभी खत्म नहीं होता, वह हर पल नया रूप लेता है।

सूरज और चाँदनी- एक अनकहा संगम

सुश्री अनुष्का चौबे
सुपुत्री- श्री नवीन कुमार चौबे, स.लेप.अ.

आसमान के विशाल चित्रपटल पर,
सूरज अपनी सुनहरी तूलिका से
हर सुबह उम्मीद के रंग भरता।
उसकी किरणें राह दिखातीं,
हर अँधेरे को दूर भगातीं।

पर कभी-कभी,
उसकी चमक इतनी तीव्र हो जाती,
कि मन की नर्म कोंपलों पर
थोड़ी थकान उतर आती।

तभी, बादलों के रेशमी परदे को हटाकर,
चाँदनी उतरती –
कोमल, ठंडी, और स्नेह से भरी।
वो थके उजाले को सहलाती,
धीमे स्वर में कहती –
"तेरी गर्मी ने जीवन को जगाया,
अब मेरी शांति उसके सपनों को सजाएगी।"

सूरज ने मुस्कुरा कर जाना,
कि प्रकाश केवल तेज़ होना नहीं,
कभी-कभी ठहर कर
मन को सुकून देना भी है।

और चाँदनी ने समझा,
कि उसकी नर्मी भी अधूरी है,
जब तक सूरज की ऊष्मा
उसके आकाश को पूर्ण न करे।

दिन में सूरज का पाठ,
रात में चाँदनी की कहानी –
दुनिया इन दोनों के संगम से चलती रही।
वो मिले कम, पर असर हमेशा रहा,
जैसे दो अलग राहें एक मंज़िल तक जाती हों।

ना कोई नाम, ना कोई बंधन,
बस एक गहरी समझ –
कि ताक़त और कोमलता
जब साथ आती हैं,
तभी दुनिया में
सच्ची रोशनी और सुकून का संतुलन बनता है।

और यही जीवन का सबसे सुंदर पाठ है –
कभी किसी के लिए सूरज बनो,
जो दिशा दिखाए;
कभी किसी के लिए चाँदनी बनो,
जो दिल को थामे।
क्योंकि सबसे अनमोल रिश्ते
शब्दों में नहीं,
दिल की खामोशी में पनपते हैं।

AI से समाचार सूचना में प्रभाव

श्री अरबिन्द शतपथी
लेखापरीक्षक

सूचना का स्वरूप बदल रहा है। जहाँ कभी सुबह की चाय के साथ अखबार पढ़ना एक परंपरा थी, वहीं आज स्मार्टफोन की स्क्रीन पर उंगलियों की हलचल से समाचारों की दुनिया खुल जाती है। इस परिवर्तन के केंद्र में है – कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence-AI) AI ने न केवल समाचारों की प्रस्तुति को बदला है बल्कि उनके निर्माण, विश्लेषण और प्रसारण की प्रक्रिया को भी पुनर्परिभाषित कर दिया है।

AI की अवधारणा 1950 के दशक में उभरी परंतु इसका वास्तविक प्रभाव 21वीं सदी में देखने को मिला। प्रारंभ में यह तकनीक शोध प्रयोगशालाओं तक सीमित थी लेकिन अब यह आम नागरिक के मोबाइल तक पहुँच चुकी है। समाचार उद्योग में AI का प्रवेश तब हुआ जब मीडिया हाउस ने समाचारों की गति और वैयक्तिकता को बढ़ाने के लिए एल्गोरिदम आधारित टूल्स अपनाने शुरू किए। आज AI हेडलाइन लिखता है, घटनाओं का सारांश बनाता है और पाठकों की रुचि के अनुसार सामग्री प्रस्तुत करता है।

पारंपरिक समाचार पत्रों में संपादकीय विवेक, गहराई और सामाजिक जिम्मेदारी का समावेश होता था। वहीं AI आधारित समाचारों में गति और विविधता प्रमुख हैं। उदाहरणस्वरूप, ChatGPT जैसे टूल्स कुछ ही सेकंड में किसी घटना का सारांश प्रस्तुत कर सकते हैं जबकि पारंपरिक पत्रकार को इसके लिए शोध, साक्षात्कार और संपादन की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। यह परिवर्तन सूचना की उपलब्धता को सरल बनाता है परंतु इसके साथ ही गुणवत्ता और सत्यता की चुनौतियाँ भी उत्पन्न होती हैं।

AI के माध्यम से समाचारों की प्रस्तुति में कई लाभ सामने आए हैं। घटनाओं की रिपोर्टिंग तत्काल संभव होती है। पाठकों को उनकी रुचि के अनुसार AI, हिंदी सहित कई भाषाओं में समाचार प्रस्तुत कर सकता है, जिससे क्षेत्रीय पाठकों को भी लाभ होता है। AI आधारित सत्यापन प्रणाली झूठी खबरों को फ़िल्टर करती है।

जहाँ AI गति प्रदान करता है, वहीं यह मानवीय विवेक और नैतिकता से वंचित रहता है। एल्गोरिदम में अंतर्निहित पूर्वाग्रह (bias) समाचारों की निष्पक्षता को प्रभावित कर सकते हैं। साथ ही, AI आधारित लेखन में भावनात्मक गहराई और सामाजिक संदर्भ की कमी होती है। पत्रकारिता केवल सूचना नहीं बल्कि समाज का दर्पण होती है – और यह भूमिका AI पूर्णतः नहीं निभा सकता।

रॉयटर्स की 2025 रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 18-34 आयु वर्ग के केवल 24% लोग समाचार वेबसाइटों को प्राथमिक स्रोत मानते हैं, जबकि 41% सोशल मीडिया और वीडियो प्लेटफॉर्म को प्राथमिकता देते हैं। यह दर्शाता है कि AI- संचालित डिजिटल माध्यम पारंपरिक पत्रकारिता को पीछे छोड़ रहे हैं। YouTube और Instagram जैसे प्लेटफॉर्म पर समाचार इन्फ्लुएंसर उभर रहे हैं, जो AI टूल्स की मदद से टिप्पणी, विश्लेषण और व्यंग्य प्रस्तुत करते हैं। ये क्रिएटर पारंपरिक पत्रकारिता की सीमाओं को चुनौती दे रहे हैं और जनता से गहराई से जुड़ रहे हैं। AI अब आधार, भाषिणी और चित्रलेखा जैसे प्लेटफॉर्म के माध्यम से सरकारी सेवाओं में भी समाचार और सूचना को सुलभ बना रहा है। इससे सूचना का लोकतंत्रीकरण और भाषायी समावेशिता सुनिश्चित हो रही है।

AI ने सूचना को लोकतांत्रिक बनाया है – अब हर व्यक्ति अपनी रुचि के अनुसार समाचार पा सकता है परंतु इसके साथ ही यह आवश्यक है कि पाठक डिजिटल साक्षरता विकसित करें ताकि वे सूचना की सत्यता और स्रोत की प्रामाणिकता को समझ सकें। भविष्य में AI और पत्रकारिता का समन्वय ही सूचना की गुणवत्ता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करेगा। AI ने समाचारों की दुनिया में एक नया अध्याय लिखा है – जहाँ सूचना की गति, विविधता और अनुकूलन प्रमुख हैं परंतु पत्रकारिता की आत्मा अब भी मानवीय विवेक, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी में निहित है। AI एक शक्तिशाली उपकरण है परंतु इसका उपयोग विवेकपूर्ण और संतुलित ढंग से किया जाना चाहिए तभी हम सूचना के इस नए युग में सच्चाई और समझदारी के साथ आगे बढ़ सकेंगे।

गृहिणी - एक अदृश्य योद्धा की कहानी

श्रीमती नीतू चंद्रा
पत्नी- श्री विभाष चंद्र, स.लेप.अ.

गृहिणी वह महिला होती है जो परिवार और घर की देखभाल करती है। वह घर की व्यवस्था, सफाई, खाना बनाना, बच्चों की परवरिश और परिवार के सभी सदस्यों की जरुरतों का ध्यान रखती है। एक गृहिणी का काम आसान नहीं होता क्योंकि उसे सुबह से लेकर रात तक अलग-अलग जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती है। वह घर को सुखी और सुसंस्कृत बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। गृहिणी अपने त्याग, मेहनत और धैर्य से परिवार को एकजुट रखती है। भले की उनके काम के लिए उसे कोई वेतन न मिले लेकिन परिवार को चलाए रखने में उसका योगदान अमूल्य होता है। इसलिए कहा जाता है कि गृहिणी घर की आत्मा, परिवार की आधारशिला होती है।

एक महिला की शादी से लेकर माँ तक की यात्रा एक जटिल और बहुआयामी अनुभव होता है। यह एक ऐसी यात्रा है जो उसे मजबूत, स्वतंत्र और आत्मविश्वासी बनाती है। एक लड़की समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा है। वह बेटी, बहन, पत्नी और माँ के रूप में परिवार को संभालती है। एक लड़की का जीवन अनेक रंगों और अनुभवों से भरा होता है। जन्म के बाद से ही वह अपने परिवार का प्यार-दुलार पाती है। बचपन में खेल, पढ़ाई और सपनों से भरा उसका संसार होता है। जैसे-जैसे वह बड़ी होती है उसे जिम्मेदारियों, संस्कारों और जीवन के उतार-चढ़ाव का अनुभव होता है।

शादी से पहले एक लड़की अपने माता-पिता के घर में सुरक्षित माहौल में रहती है। वह अपनी पढ़ाई, करियर और शौक पूरे करने की कोशिश करती है। इस समय वह परिवार का केंद्र होती है, जहाँ हर कोई उसकी छोटी-छोटी जरुरतों का ध्यान रखता है लेकिन साथ ही उसे समाज के नियम और अपेक्षाएँ भी सिखाई जाती हैं ताकि वह आगे की जिंदगी के लिए तैयार हो सके।

शादी के बाद लड़की एक नए परिवार में प्रवेश करती है। यह उसके जीवन का सबसे बड़ा बदलाव होता है- नई जगह, नए लोग, नई आदतें। उसे अपने मायके की याद आती है लेकिन वह अपने नए रिश्तों को अपनाने और निभाने की कोशिश करती है। इस समय उसका धैर्य, समझदारी और समर्पण उसकी बड़ी ताकत बनती है। वह मायके की प्यारी बेटी और बहन से ससुराल की बहू, पत्नी और माँ बनने की जिम्मेदारियों में प्रवेश करती है। यह सफर केवल रिश्तों का ही नहीं बल्कि भावनाओं, उम्मीदों और संघर्षों का भी होता है। शादी के बाद लड़की को नए घर, नई परंपराओं और नए लोगों के बीच खुद को ढालना पड़ता है। मायके की यादें और ससुराल की उम्मीदें दोनों उसके मन में साथ-साथ चलती रहती हैं। वह अपने जीवनसाथी के साथ मिलकर नए सपनों की नींव रखती है लेकिन इस सफर में कई बार उसे अपनी इच्छाओं से समझौता भी करना पड़ता है। कभी-कभी सफर आसान होता है तो कभी चुनौतियों से भरा लेकिन एक लड़की अपने धैर्य, प्रेम और समझदारी से इन चुनौतियों पर पार पाती है। शादी के बाद का सफर उसकी पहचान को और

मजबूत बनाता है और उसे जीवन की असली जिम्मेदारियों से रुबरु कराता है। लड़की को अपने अस्तित्व को नई दिशा देने की एक लंबी और खूबसूरत यात्रा होती है।

दामपत्य जीवन शुरु करने के बाद वह अपने पति के साथ नए सपनों और एक नए घर की नींव रखती है। धीरे-धीरे समय के साथ उसका रिश्ता और गहरा होता है। पति-पत्नी का यह साथ उन्हें एक और खूबसूरत पड़ाव की ओर ले जाता है- माँ-बाप बनने की यात्रा।

गर्भावस्था उसके लिए चुनौती और खुशी दोनों लेकर आता है। वह अपने शरीर में हो रहे बदलावों को महसूस करती है। कभी थकान और तकलीफें झेलती है तो कभी आने वाले बच्चे के बारे में सोचकर मुस्कुरा देती है। जब वह माँ बनती है तो उसकी दुनिया बदल जाती है। नौ महीने के बाद जब अपने बच्चे को पहली बार गोद में लेती है तो उसकी सारी तकलीफें खुशी में बदल जाती है। वह एक माँ के रूप में नए जीवन की शुरुआत करती है। अपने बच्चे के लिए वह दिन-रात जागती है। उसकी छोटी सी मुस्कान में अपनी सारी थकान भूल जाती है। माँ बनने तक का सफर एक लड़की को और मजबूत, धैर्यवान और संवेदनशील बना देता है। यह यात्रा उसके जीवन की सबसे अनमोल और यादगार यात्रा होती है, जो उसे प्रेम, त्याग और आत्मबल का सच्चा अर्थ सिखाती है।

गृहिणी का काम केवल खाना बनाना या घर साफ करना ही नहीं होता बल्कि वह घर के हर सदस्य की देखभाल करती है, उनकी जरूरतों का ध्यान रखती है और उनके सुख-दुख में साथ खड़ी रहती है।

सुबह सबसे पहले उठकर पूरे घर को जगाती है। बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करती है, पति को ऑफिस के लिए भोजन और कपड़े देती है, बुजुर्गों की देखभाल करती है और फिर अपने घरेलू कार्यों में लग जाती है। बाजार जाना, राशन लाना, कपड़े धोना, खाना पकाना, बच्चों की पढ़ाई में मदद करना, ये सब उसके रोजमर्रा के काम हैं लेकिन इन सबके बीच उसकी परेशानियाँ भी कम नहीं होतीं। शारीरिक थकान, समय की कमी, कभी आर्थिक तंगी उसे परेशान कर देती है। उसकी मेहनत का कोई निश्चित समय नहीं होता। वह चौबीसों घंटे परिवार की सेवा में लगी रहती है। कई बार उसकी सेहत और उसके अपने सपने भी इन जिम्मेदारियों में पीछे छूट जाते हैं फिर भी वह चेहरे पर मुस्कान रखकर अपने कर्तव्यों को निभाती है। कभी थकान या दर्द को परिवार पर हावी नहीं होने देती।

गृहिणी के काम में छुट्टी नहीं होती । कई बार उसकी मेहनत को लोग सहज मान लेते हैं और उसकी सराहना नहीं करते। फिर भी वह बिना शिकायत के अपना काम करती रहती है क्योंकि उसे अपने परिवार की खुशी सबसे ज्यादा प्रिय होती है। गृहिणी का योगदान अमूल्य है। हमें उसकी मेहनत और त्याग का सम्मान करना चाहिए ताकि वे भी आराम और अपनी रुचियों के लिए समय निकाल सकें।

गृहिणी के बार में डॉ अंशुल सक्सेना की कुछ पंक्तियाँ मैं यहाँ उदधृत करना चाहती हूँ -

कभी तंगी में, कभी मंदी में
कभी बंधन में पाबंदी में
कभी घर गृहस्थी के धंधे में
कभी कर्तव्यों के फंदे में
ख्वाहिशें उसकी झूल गई
अपनों की परवाह करने में
वह खुद ही खुद को भूल गई।

बड़ा ही मामूली शब्द है गृहिणी पर इसका अर्थ बहुत गहरा है। सारा घर है जिसका ऋणी, वही है - गृहिणी।

पहली यात्रा

श्रीमती पूजा कुमारी
पत्नी - श्री चंदन कुमार, स.लेप.अ.

शादी के बाद पहली बार अपने पति के साथ भुवनेश्वर जाने की यात्रा का ख्याल आज भी मेरे मन में बसा हुआ है। मेरी शादी साहिबगंज में स्थित मेरे गांव से हुई थी । शादी के बाद मुझे वहां से अपने पति के साथ भुवनेश्वर आना था, जहां पर वे नौकरी करते थे। हमारी ट्रेन साहिबगंज से रात 8:00 की थी। साहिबगंज से हमें पहले हावड़ा आना था फिर वहां से भुवनेश्वर के लिए दूसरी ट्रेन थी। हमारी पहली यात्रा साहिबगंज रेलवे स्टेशन से शुरू हुई। हमें स्टेशन छोड़ने बहुत सारे लोग आए थे। हम दोनों ने सबसे आशीर्वाद लेकर अपनी यह यात्रा प्रारंभ की। ट्रेन के अंदर कदम रखते ही मैंने देखा कि सब कुछ बहुत सुव्यवस्थित और साफ सुथरा था, सब कुछ अच्छा होते हुए भी न जाने मेरे मन में क्यों बेचैनी सी हो रही थी। मेरी सीट खिड़की के पास थी, जिससे मुझे बाहर के दृश्य देखने का अवसर मिला। रात की यात्रा होने की वजह से खिड़की के बाहर झांकने पर अंधेरे में जलती हुई रोशनी बहुत ही सुंदर दृश्य प्रस्तुत कर रही थी और चांद की रोशनी मेरे मन को बहुत शीतलता दे रही थी। यह हमारी पहली यात्रा थी, जिसके कारण हम दोनों में से कोई भी एक-दूसरे से ज्यादा बात नहीं कर पा रहा था क्योंकि पता ही नहीं चल पा रहा था कि क्या बोले और क्या ना बोले।

दोनों आमने सामने बैठे थे लेकिन दोनों खामोश थे। देखते ही देखते रात का बहुत समय बीत गया और दोनों बस कभी इधर-उधर, कभी बाहर तो

कभी एक दूसरे को देखते। फिर धीरे-धीरे हम दोनों ने थोड़ी-थोड़ी बात करनी शुरू की और देखते-देखते हम दोनों ना जाने कितनी बातें करने लगे और धीरे-धीरे एक-दूसरे को समझने लगे पर अंदर की बेचैनी अभी भी कम नहीं हो रही थी क्योंकि मैं पहली बार कहीं बाहर जा रही थी और उस जगह के बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था। एक वृद्ध पति-पत्नी जो पुरी दर्शन के लिए जा रहे थे, वे बहुत देर से हम दोनों को देख रहे थे और उनको मेरे अंदर चल रहे परेशानी का शायद पता चल गया। उन्होंने अंत में पूछ लिया, “बेटी कुछ परेशानी है क्या..?” तो मैं हंसते हुए बोली, “नहीं आंटी कोई परेशानी नहीं है, मैं पहली बार अपने पति के साथ भुवनेश्वर जा रही हूं, बस थोड़ी सी घबराहट है।” उन्होंने मुझे बहुत अच्छी तरह से समझाया कि भुवनेश्वर देवी-देवताओं का शहर है, जहां भगवान का वास होता है। तुम बिना डरे आराम से वहां जाओ, भगवान के दर्शन करो और अच्छे से रहो, तुम्हारी जिंदगी बहुत अच्छे से कटेगी। इसके साथ ही उन्होंने वैवाहिक जीवन को अच्छी तरह से चलाने के लिए बहुत सारे बातें मुझे बताईं, जिससे मेरे अंदर की घबराहट और बेचैनी बहुत हद तक शांत हो गई और मैं आराम से आगे की यात्रा के लिए तैयार हो गई।

फिर धीरे-धीरे मुझे नींद आने लगी और मैं सुकून से सो गई। हमारी ट्रेन 3:30 पर हावड़ा स्टेशन पहुँची। वहां पर हम दोनों ने अपना सारा सामान उतारा। एक और अच्छी बात थी कि वे जो अंकल-आंटी थे, वे भी पुरी जा रहे थे। वे भी हमारे साथ दक्षिण दिशा ओर की जाने के लिए निर्धारित प्लेटफार्म पर आए लेकिन दूसरे ट्रेन पर उनका रिजर्वेशन दूसरे डब्बे में था, जिसके कारण हमारी मुलाकात उनसे वहीं पर समाप्त हो गई। लेकिन उनसे की गई बातचीत के कारण मेरे मन को बहुत शांति मिली थी और मैं अब बहुत खुशी-खुशी भुवनेश्वर जाने को उत्सुक थी। हमलोगों ने वहाँ से दूसरी ट्रेन ली और हम लोग भुवनेश्वर आ गए। यह सफर इतनी जल्दी कट गया कि मुझे पता भी नहीं चला। भुवनेश्वर जाकर सबसे पहले मैंने देखा कि यहां के स्टेशन बहुत साफ सुथरे हैं और यहां के लोग भक्ति और भगवान पर बहुत विश्वास करते हैं, जो कि मुझे बहुत अच्छा लगा और मैं प्रफुल्लित हो गई कि यह जगह सच में रहने के लिए बहुत ही अच्छी है। उसके बाद हमलोगों ने वहां से एक किराए की टैक्सी बुक की और हम लोग रेल विहार यानि जहां मेरे पति का सरकारी क्वार्टर था, वहां पर आ गए। इस तरह से मेरी पहली यात्रा समाप्त हुई, जो बहुत ही मजेदार थी क्योंकि इसमें मैं थोड़ी डरी भी हुई थी और थोड़ी घबरायी भी हुए थी। साथ ही बहुत से ऐसे लोग ट्रेन में मिले, जिन्होंने मेरी घबराहट को दूर किया, जिसके कारण यह यात्रा मुझे हमेशा याद रहेगी।

सुंदरता ही चरित्र है

श्रीमती डी. सुधा कल्याणी
वरि. लेखापरीक्षक

तेलुगु सिनेमा में एक महिला पात्र ने मुझे बहुत प्रेरित किया। एक महिला को रानी की तरह बड़ा होना चाहिए। अंतिम संस्कार में भी एक रानी गरिमा के साथ विलाप करती है। आँसुओं में भी उसने अपनी गरिमा खोई । अगर एक महिला एक अच्छा चरित्र बनाती है तो भगवान भी उससे सवाल नहीं करते। जब एक मेहनती महिला थोड़ी सुंदर दिखती है तो दुनिया अक्सर उसके सपनों, संघर्षों, दृढ़ संकल्प और आँसुओं को नज़रअंदाज़ कर देती है। वे सोचते हैं कि उसकी सारी सफलता उसके रूप के कारण है लेकिन सुंदरता वास्तव में क्या है?

यह रूप नहीं है।
यह रंग नहीं है।
यह श्रृंगार नहीं है।
यह किसी की राय नहीं है।
यह किसी का निर्णय नहीं है।
यह किसी कवि की प्रशंसा नहीं है।
यह किसी चित्रकार की दृष्टि नहीं है।

एक महिला होने के नाते, मैं यह कहती हूँ– मुझे "सुंदर" कहा जाता है। इसके बजाय, आप यह कहते:

"आप कड़ी मेहनत की प्रेरणा हैं।", "तुम दयालु हो।", "तुम बहादुर हो।", "तुम बुद्धिमान हो।"
ये मुझे खुश करते। हमें हमारे गुणों से संबोधित करें।
एम.एस. सुब्बालक्ष्मी सौंदर्य नहीं, भक्ति हैं।
मदर टेरेसा सौंदर्य नहीं, करुणा हैं।
ऐन रैंड सौंदर्य नहीं, दर्शन हैं।
सरस्वती ज्ञान हैं।
दुर्गा साहस हैं।
गौरी तपस्या हैं।
लक्ष्मी समृद्धि हैं।

प्रत्येक देवी को उसके रूप के लिए नहीं बल्कि उसके गुणों के लिए पूजा जाता है। आपके गुण आपके हस्ताक्षर बनते हैं, आपका सौंदर्य नहीं।

इसीलिए इस संसार को और पुरुषों से ज़्यादा स्त्रियों को, सौंदर्य से परे स्त्रियों को देखना चाहिए। जब आप सौंदर्य से परे देखते हैं, तो आप एक स्त्री में सागर देखते हैं। आप गुणों से भरपूर एक देवी को देखते हैं।

तो...
अपने भीतर की देवी को खोजें..
अपने भीतर की देवी को।

सिमलीपाल की यात्रा

श्री मानस रंजन जेना
लेखापरीक्षक

ऐसे तो ओडिशा में अनेक पर्यटन स्थल हैं मगर दिल को छू लेने वाले एक प्राकृतिक सौंदर्य से भरे दिलचस्प जगह 'सिमलीपाल' के बारे में बताने जा रहा हूँ। 2750 वर्ग किलोमीटर से अधिक जगह में फैला हुआ सिमलीपाल एडवेंचर के साथ ही प्राकृतिक सुंदरता से रूबरू कराता है। ओडिशा के मयूरभंज जिले में स्थित सिमलीपाल एक खूबसूरत पर्यटन स्थल है। ओडिशा सरकार द्वारा 1979 में अभ्यारण और बाद में राष्ट्रीय उद्यान की मान्यता दी गयी है। सेमल और लाल कपास के पेड़ों की वजह से इस जगह का नाम सिमलीपाल हुआ है। वन्यजीवों, प्राकृतिक झरनों, छोटे-बड़े पहाड़ियों से परिवेशित यह सिमलीपाल हर पर्यटक के लिए काफी आकर्षक है।

यह फूलों वाले पौधों की 1076 से अधिक प्रजातियां, गैर फूलों वाले पौधों की 99 से अधिक प्रजातियों, उभयचर की 21 प्रजातियों, सरीसृपों की 62 से अधिक प्रजातियों, पक्षियों की 361 प्रजातियों, स्तनधारियों की 55 प्रजातियों और अनगिनत वनस्पतियों एवं जीवों का निवास स्थान है। इसके साथ यहाँ ऑर्किड की 96 प्रजातियां उपलब्ध हैं। दुर्लभ, लुप्तप्राय, संकटग्रस्त और सुरक्षित पौधों और जानवरों की कई प्रजातियाँ सिमलीपाल में निवास करते हैं। चित्तीदार हिरण, सांभर, हाथी, हॉर्नबिल, चौसिंगा, बाइसन, साही, पैंगोलिन, जंगली सूअर, बार्किंग हिरण, जंगली बिल्ली, माउस हिरण, विशाल गिलहरी, उड़ने वाली गिलहरी, रूडी नेवला, मगरमच्छ और रूफस पूंछ वाले खरगोश, मोर इस अनूठी जैव विविधता के उदाहरण है। सिमलीपाल अभ्यारण अकेले ही ओडिशा के 75% बाघों और 25% हाथियों का घर माना जाता है।

कैसे और कब पहुंचे:-

सिमलीपाल जाने के लिए निकटतम हवाई अड्डा भुवनेश्वर, जमशेदपुर और कोलकाता है। ट्रेन से आने वाले पर्यटकों के लिए निकटतम रेलवे स्टेशन बालेश्वर रेलवे स्टेशन है और यहां से बारीपदा के लिए बस और प्राइवेट परिवहन की सुविधा उपलब्ध है। ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर से एक ट्रेन है जिसका नाम बांगीरपोसी है, जो ओडिशा के मयूरभंज जिला के मुख्य शहर बारीपदा को जोड़ती है।

सिमलीपाल जाने के लिए सितंबर से मार्च का समय बहुत अनुकूल है जबकि यह लगभग जून तक खुला रहता है। सिमलीपाल अभ्यारण की सुंदरता को दिल से निहारने के लिए आप इसके अंदर मौजूद चार प्राकृतिक शिविरों और इसके उपकंठ में एक प्राकृतिक शिविर में ठहर सकते हैं। सिमलीपाल के अंदर मौजूद प्राकृतिक शिविर एक-दूसरे से लगभग 20 से 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। बरेहिपानी, जमुआनी, गुरगुरिया और कुमारी एवं उपकंठ में रामतीर्थ प्रकृति शिविर स्थित है। सिमलीपाल अभ्यारण के अंदर स्थित प्राकृतिक शिविर में रुकने के लिए अग्रिम बुकिंग की व्यवस्था है जो ऑनलाइन और ऑफलाइन के माध्यम से किया जा सकता है। ऑफलाइन बुकिंग के लिए मयूरभंज(बारीपदा) ऑफिस में कुछ जरूरी कागजात जमा

करके बुकिंग कर सकते हैं। इस संस्था का मुख्य कार्यालय भुवनेश्वर में “अरण्य भवन” के नाम पर नाल्को स्क्वायर में स्थित है। अधिकतर पर्यटक दूर-दूर से आकर बारीपदा स्थित होटल में विश्राम करते हैं और फिर सुबह उठकर नाश्ता करके सफर में निकलते हैं। सिमलीपाल को आने वाले कुछ पर्यटक एक दिन की सफारी का आनंद उठाते हैं, जो सुबह 7:30 तक प्रवेश द्वार पर स्थित ऑफिस से टिकट बनाकर घुसते हैं और शाम 5:00 बजे तक दूसरी गेट से निकल जाते हैं, लेकिन प्राकृतिक शिविर में रात में रुकने वाले पर्यटक शाम को शिविर में आ जाते हैं। अभ्यारण के अंदर प्रवेश के लिए दो द्वार हैं- पीठाबटा, जो लुलुंग के पास स्थित है, जो बारीपदा से लगभग 20 किलोमीटर दूरी पर है और दूसरा प्रवेश द्वार जशीपुर में कालिआना और कालिकाप्रसाद के नाम से नामित है, जो बारीपदा से लगभग 100 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

मेरी व्यक्तिगत अनुभूति:-

व्यक्तिगत रूप से मैं मयूरभंज जिले के बारीपदा शहर से भली-भांति परिचित हूं। मेरे पिताजी की नौकरी के दौरान हमारा परिवार इस शहर में रहता था और छठी कक्षा से ग्रेजुएशन तक करीब 12 साल यहां पर गुजारे थे लेकिन इतने साल बारीपदा शहर में रहने के बावजूद सिमलीपाल जाने का मौका नहीं मिला था। पढ़ाई खत्म करने के बाद नौकरी के लिए बाहर आना पड़ा। मन में बहुत आग्रह था कि कभी ना कभी सिमलीपाल जरूर जाऊंगा। किस्मत से मेरे कुछ पुराने मित्रों के साथ बात हुई और हम पांच मित्रों ने सिमलीपाल जाने का प्लान बनाया। हम प्राकृतिक शिविर में रहने के लिए बारीपदा स्थित कार्यालय में बुकिंग के लिए गए। 26 दिसंबर 2018 को रहने का बुकिंग था। भुवनेश्वर से हम चार लोग बस से बारीपदा 25 तारीख की शाम को पहुंच गए, जहां पर हमारा एक और मित्र इंतजार कर रहा था, जो उसी शहर का था। हम दोपहर में एक बहुत ही लोकप्रिय भोजनालय ‘गरमागरम’ में मटन मील खाए। खाने के बाद पुराने दिनों को ताजा करने के लिए शहर के आसपास स्थित कुछ जगह घूमने के लिए निकल पड़े जहां हमारी यादें जुड़ी हुई थी और कुछ पुराने मित्रों से मिलने का भी मौका मिला। शाम को होटल पहुंचकर प्राइवेट टैक्सी को सुबह 6:00 बजे पहुंच जाने के लिए याद दिलाकर सो गए। सुबह 6:00 बजे तक हम लोग तैयार हो गए थे। बस संदीप का इंतजार था, हमारे बारीपदा का मित्र संदीप भी 6:30 बजे तक पहुंच गया। फिर हमलोग बोलेरो का इंतजार करने लगे। बोलेरो लेकर चित्त भाई 7:00 बजे पहुंच गए। प्रभु का नाम लेकर हम लोग निकल पड़े। मन में बहुत खुशी और उत्साह था। हमलोगों ने जस्सीपुर स्थित कलिआना गेट से प्रवेश करने का प्लान बनाया था जो बामन घाटी से होते हुए जाता है और जिसके ऊपर सफर करने का आनंद कुछ और ही है। बांगीरपोसी के बाद NH-49 में यह बामन घाटी आती है जिसका दूसरा नाम द्वारसुनी है, जो इस घाटी में स्थित प्रसिद्ध माता ‘देवी द्वारसुनी’ के नाम से भी परिचित है। बांगीरपोसी से ठीक आधा किलोमीटर पहले हमारे बोलेरो का एक पहिया पंचर हो गया और हमलोग थोड़ा परेशान हो गए। लेकिन चित्त भाई जो हमारे बोलेरो के ड्राइवर थे तुरंत नजदीकी गैरेज से मैकेनिक बुलाकर जल्दी

ठीक करने में लग गए। हमलोग बस बार-बार घड़ी देख रहे थे और परेशान हो रहे थे। गाड़ी ठीक होने में लगभग पौने घंटा लग गया था और घड़ी में 8:30 बज चुके थे। अब हम लोग और देर ना करते हुए कलियाना गेट के लिए निकल पड़े। अब हमारी गाड़ी बामन घाटी के ऊपर चढ़ना शुरू कर चुकी थी और दोनों तरफ ऊंचे-ऊंचे जंगली पेड़ों का नजारा अनोखा था। हमारी गाड़ी सांप की तरह टेढ़े-मेढ़े रास्ते के ऊपर जा रही थी। आगे से छोटी-बड़ी गाड़ियां आ रही थीं। इसी बीच हमारी गाड़ी द्वारसुनी मंदिर के पास आकर रुक गई और माता के सामने माथा टेकने के लिए हमलोग गाड़ी से उतर गए। लगभग सारे गाड़ी वाले यहां रुककर माथा टेकते हैं और प्रसाद चढ़ाते हैं। उसके बाद फिर हम सफर में निकल पड़े। कलियाना घाटी पहुंचते-पहुंचते 9:40 बज चुके थे। गाड़ी से उतरते ही हमारे चेहरे पर खुशी कम ज्यादा परेशानी थी। गेट के सामने स्थित छोटे से कार्यालय के सामने एक लंबी लाइन बनी हुई थी। कम से कम 30-40 लोग अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे। अब हम निश्चिंत हो गए थे कि हमलोगों को पहुंचने में थोड़ी देरी हो गई है। सुबह हमें थोड़ा जल्दी निकलना चाहिए था। करीब आधे घंटे इंतजार करने के बाद सारे प्रवेश अनुमति पत्र और परिचय पत्रों की जांच हुई और घड़ी में 10:30 हो गये थे। जंगल के अंदर प्रवेश करने से पहले बोर्ड पर लिखी सावधानियों को पढ़ लेना जरूरी था। अब हमारी गाड़ी जंगल के अंदर प्रवेश कर चुकी थी और जोर से भूख भी लग रही थी। हमने गाड़ी के अंदर रखे हुए कुछ फल और स्नेक्स खा लिए जिससे कुछ समय बर्बाद होने से बच गया। जंगल के अंदर 8-10 किलोमीटर तक नजारे सामान्य थे। बीच-बीच में छोटी-छोटी एक-दो दुकानें और मकान देखने को मिले। चित्त भाई हमें बता रहे थे कि उसके आगे बहुत ही आकर्षक जगह आएगी। आहिस्ता-आहिस्ता जंगल का रास्ता थोड़ा सुनसान लगने लगा। रास्ते के दोनों तरफ बड़े-बड़े पुराने पेड़ देखने को मिले। रास्ते दाहिने तरफ एक झरना देखने को मिला। चित्त भाई को कहकर गाड़ी रुकवाया और झरने में पड़े हुए पत्थर के ऊपर पैर टिकाते हुए थोड़ा अंदर गए और बहुत सारी सेल्फियां लेने लगे। बहते हुए पानी में पैर हिलाते हुए हाथों से पानी फेंकने लगे। झरने का पानी बहुत ठंडा था। बड़े-बड़े चट्टानों के ऊपर बैठकर सूरज की गर्मी का मजा ले ही रहे थे कि तभी चित्त भाई ने आवाज दी.... जल्दी करो.... अभी और भी बहुत कुछ देखने को बाकी है... नहीं तो देर हो जाएगी...। हमलोगों को ना चाहते हुए भी गाड़ी में आकर बैठना पड़ा। गाड़ी अब थोड़े उबड़-खाबड़ रास्ते से गुजर रही थी। पीछे देखने से धूल का एक गुब्बारा बनता जा रहा था। टेढ़े-मेढ़े रास्ते से गुजरते हुए गाड़ी एक चेक-गेट के सामने आकर रुक गई, जहां हमारी गाड़ी के सामने दो-तीन गाड़ियों की चेकिंग चल रही थी। मुख्यतः पका हुआ खाना, शराब, हथियार जैसे सामानों की चेकिंग हो रही थी। चेकिंग के बाद हम फिर से आकर्षक जगह का ख्याल मन में लिए निकल पड़े। आसपास का दृश्य इतना सुंदर था कि हम एक क्षण भी नजरें हटा नहीं पा रहे थे। कुछ समय के अंतराल में हरेक मोड़ पर गाड़ी रुकवा कर सौंदर्य का आनंद उठाने और सेल्फी लेने की इच्छा हो रही थी। कुछ देर बाद गाड़ी एक मोड़ पर आकर रुक गई और हमारे कुछ समझने से पहले चित्त भाई गाड़ी से उतर गए और रास्ते के दाएं तरफ चल पड़े, कुछ 15-20 मीटर अंदर जाकर रुक गए और हमें वहां बुलाया। वहाँ पहुंचने पर हमलोगों को पता चला कि वहाँ 700 साल पुराने एक बड़ा सा पेड़ है। उस 700 साल पुराने पेड़ को देखकर जितना आश्चर्य हुआ उतना आनंद भी आया। आसपास के वातावरण से यह पता चल रहा था कि अभी हमारी गाड़ी थोड़े घने जंगल से होते हुए जा रही है। मन में थोड़ा डर सा महसूस हो रहा था, एक भी इंसान नजर नहीं आ रहा था। कुछ समय बाद और एक टूरिस्ट गाड़ी नजर आयी तो थोड़ा हल्का सा महसूस हुआ। कुछ देर बाद हम एक खुले जंगल से गुजरने लगे और सामने से कुछ बच्चे आगे वाली गाड़ी के पीछे दौड़ रहे थे और उस गाड़ी से टूरिस्ट उन्हें चॉकलेट्स और स्नैक्स के पैकेट दे रहे थे।

जैसे ही हमारी गाड़ी पहुंची वे बड़े आग्रह से आकर पहुंच गए और हमने भी उन्हें कुछ स्नैक्स के पैकेट दे दिए। पता चला कि वे लोग इस जंगल में रहने वाली जनजाति हैं जिन्हें सरकार बहुत बार विस्थापित करने की कोशिश कर चुकी थी। कुछ जनजाति विस्थापित हो गए थे पर कुछ अभी भी अपने पुरखों की माटी और धरोहर को छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे, पर उन बच्चों और जनजाति के लोगों को देखकर एक बात तो निश्चित थी कि वे लोग अभी भी आधुनिक समाज से बिल्कुल अनजान थे। हमलोग उन बच्चों को कुछ आर्थिक सहायता देने की सोच रहे थे कि चित्त भाई ने रुपया-पैसा देने के लिए मना किया । फिर हमलोगों ने मदहोश मन के साथ सफर जारी रखा। रास्ता बहुत ही पतला और उबड़-खाबड़ हो रहा था। कभी-कभी रास्ते के एक तरफ गहरी खाई नजर आती थी। हलकी सी लापरवाही और...... बहुत ही डर लग रहा था। कुछ देर के बाद हम एक सुंदर झरने के पास पहुंच चुके थे। वहाँ पूछने पर पता चला कि इस झरने का नाम 'उस्की' है। यह एक छोटा सा झरना था जिसकी ऊंचाई लगभग 50-60 फीट होगी और इसके नीचे एक बड़ा सा तालाब बना हुआ था। यह इतना शांत और सुंदर था कि हम लोगों को नहाने का मन किया। पानी के अंदर जैसे ही गए एक करंट सा महसूस हुआ। पानी जबरदस्त ठंडा था। जैसे-तैसे थोड़ा बहुत उछलकूद करके हम पानी से बाहर आ गए। ठंड से हमलोग कांप रहे थे। ठंड से राहत पाने के लिए सूरज की तपती किरण में थोड़ी देर खड़े रहे और इस दौरान झील को घेरे हुए खूबसूरत तथा शोभा बढ़ाने वाली प्रकृति का आनंद उठा रहे थे। हम सबको अब जोरों की भूख लग रही थी। घड़ी देखने से पता चला कि शाम के ढाई(2:30) बज चुके हैं। हमारी बुकिंग जमुआनी नेचर कैंप में थी और वहीं हमारे लंच का इंतजाम हुआ था। अब हम फटाफट अपने कैंप की तरफ निकल पड़े। हाँ... एक बात बताना तो मैं भूल गया कि जंगल में नेटवर्क की समस्या बहुत ही गंभीर है। कुछ निर्दिष्ट ऊँची जगहों पर फोन करने को नेटवर्क उपलब्ध थे, जिसकी जानकारी हमें चित्त भाई से मिली थी। भूख धीरे-धीरे बढ़ रही थी, हम लोग बीच-बीच में थोड़ा बहुत स्नेक्स खा रहे थे। गाड़ी कभी पहाड़ियों के ऊपर चढ़ रही थी तो कभी नीचे की तरफ उतर रही थी। डर तो लग रहा था लेकिन चित्त भाई के ड्राइविंग के ऊपर पूरा भरोसा था जो हर महीने दो-तीन बार जंगल यानी सिमलीपाल आते-जाते थे। अब हमलोग अपनी कैंप से लगभग आधा घंटा की दूरी पर थे। गाड़ी एक खुले रास्ते पर चल रही थी। सूरज की रोशनी अब थोड़ी ज्यादा थी। जंगल के अंदरूनी हिस्सों में कुछ समय बाद हमारे सामने एक छोटी सी खाने-पीने की दुकान देखने को मिली। हमलोग सोच रहे थे कि यहीं उतरकर खा लें फिर सोचा कि 15-20 मिनट की तो बात है; कैंप के स्टाफ हमारे लिए इंतजार कर रहे थे और करीब एक डेढ़ घंटे पहले फोन पर बातचीत भी हुई थी। करीब पौने घंटे बाद हम जमुआनी नेचर कैंप पर पहुंचे और हमारा आतिथ्य चंदन के तिलक और एक-एक गुलाब के फूल से किया गया जो हमें हमारी परंपरा तथा विचारों की याद दिला रहा था, "अतिथि देवो भवः"। हमलोग पहले अपनी बंबू कॉटेज में फ्रेश हो कर उनके डाइनिंग के पास पहुंच गए। अब शाम के 4:00 बज चुके थे। एसिडिटी के कारण मुझे खाने की इच्छा नहीं हो रही थी। डाइनिंग में बहुत कम ही लोग थे। खाना को थोड़ा गर्म करके हमें परोसा गया। शाम हो चुकी थी। चारों तरफ अंधेरा... बहुत सारे चिड़ियों की चहचहाहट, ठंडी हवा का झोंका था। लेकिन वहां के कंपाउंड के अंदर लाइटें जगमगाने लगीं। हमलोग कॉटेज के बाहर गप्पे मार रहे थे, कुछ देर पहले मैं और मेरा साथी सुमंत कुछ देर बैडमिंटन खेल कर आये थे।

शाम की चाय की चुस्की लेने के दौरान चित्त भाई बोले, "आधे घंटे में हमलोग जंगल जाने वाले हैं।" हमलोग आश्चर्यचकित हुए कि शाम 7:00 बजे जंगल में हम क्या देख पाएंगे। चित्त भाई ने बोला, 'रात में जंगल में रुकने का मजा तो रात की सफारी में है।' फिर 7:00 बजे हमलोग जंगल सफारी के लिए निकल

पड़े और उसी रास्ते से चार टूरिस्ट गाड़ियाँ भी निकल रही थीं। जंगल के रास्ते पर अब लगभग 20-30 गाड़ियां आगे-पीछे होकर जा रही थीं। रास्ते के कई मोड़ों पर देखने से ऐसा लग रहा था जैसे दूर बहुत सारे आग के गोले एक-दूसरे के पीछे दौड़ रहे हैं। चित्त भाई ने बोला, "आज देखना मुश्किल है..." गाड़ी रास्ते से

नीचे उतर रही थी कि गाड़ी की लाइटें बंद कर दी और रुक गए। सारी गाड़ियां एक-एक करके आगे निकल गईं, लेकिन हमलोग इंतजार करते रहे। चित्त भाई को खबर थी कि हाल ही में एक शेरनी ने बच्चा दिया था और हर दो दिन में एक बार झरने से पानी पीने आती थी। झरने का पानी हमसे लगभग 40-50 मीटर दूर था। करीब 40 मिनट चुपचाप खड़े रहने के बाद चित्त भाई ने सबको सजग रहने के लिए इशारा किया। कुछ समय उपरांत चित्त भाई ने जैसे ही गाड़ी की लाइट ऑन किया तो देखा कि शेरनी अपने बच्चों के साथ पानी पी रही थी। तुरंत चित्त भाई ने लाइट बंद कर दी और गाड़ी में चुपचाप रहने को बोला। लेकिन हमारा दोस्त संबित यह अनोखा दृश्य देख नहीं पाया था। चित्त भाई एक बार और लाइट ऑन करने ही वाले थे कि पीछे से एक और दूसरी गाड़ी की लाइट शेरनी के ऊपर पड़ी। अब वह खड़ी होकर हमारी तरफ घूरने लगी और हमलोग डर से काँप रहे थे। इसी बीच चित्त भाई ने भी लाइट ऑन कर दिया। शेरनी अपने दो बच्चों के साथ धीरे-धीरे जंगल के अंदर चली गई। कुछ समय बाद हमलोग आगे बढ़े और एक जगह पर आकर रुके, जहां बहुत सारे लोग पहले से मौजूद थे। कम से कम 100-200 लोग होंगे, 20-25 टूरिस्ट गाड़ियां खड़ी थीं। पुराने जमाने के दो-तीन घरों के साथ-साथ दो छोटी-छोटी दुकानें भी थीं। कुछ-कुछ लोग आग के चारों तरफ बैठे हुए आनंद उठा रहे थे। कुछ फॉरेस्ट गार्ड ड्यूटी कर रहे थे। उसी जगह से कुछ 100 मीटर की दूरी पर दो टावर थे जो आपस में संयुक्त थे। हम भी टावर के ऊपर चढ़े। सामने कुछ दूरी पर लोहे की तार का घेरा बना हुआ था। घेरे के उसपार नमक की बोरियां रखी गई थीं। कुछ 8-10 हाथी नमक खा रहे थे और आसपास घूम रहे थे। काफी दूरी होने के कारण हमलोग हाथियों को ठीक से देख नहीं पाए थे। रात के 9:15 यानी सवा नौ हो चुके थे, अब हमें लौटना था। लौटने के दौरान अंधेरे में जंगल के रास्तों से गुजरते हुए बिजली

की लाइट से टिमटिमाते हुए छोटे-से घर के पास पहुंचे। वह एक चेक पोस्ट था। हमारी गाड़ी वहाँ रुक गई। हमारे पीछे-पीछे तीन-चार दूसरी टूरिस्ट गाड़ियां भी आकर रुक गईं। चित्त भाई ने चेक पोस्ट के चौकीदार से बातचीत की। तब-तक दूसरी गाड़ियां वहां आगे निकल गए। कुछ देर बाद चित्त भाई ने बातचीत नहीं करने को कहा। कुछ 5-10 मिनट इंतजार करने के बाद पास में खड़े चौकीदार ने रास्ते की दूसरी तरफ टॉर्च की रोशनी डाली.....अब हमलोग जो देख रहे थे वह काफी भयानक था..... कुछ 20-30 मीटर दूरी पर एक हाथी का झुंड पैर से मिट्टी को लात मार रहा था। उसी झुंड में एक नवजात हाथी भी था इसलिए सावधानी बरतना और भी जरूरी था। कुछ समय बाद दोबारा टॉर्च लाइट मारने से पता चला कि अब वे दूर जा रहे

थे। यह दृश्य बहुत ही रोमांचक था। अब हम अपने बंबू कॉटेज में वापस आ गए थे। रात के 10:30 बज चुके थे। हम कैंटीन में भोजन करके सो गए।

हम अगले दिन सुबह 6:00 बजे उठ गए थे। थोड़ी देर बैडमिंटन खेलने के बाद गार्डन में घूमे और सेल्फी लिया और आखिर में झूले का आनंद उठाया। सब लोग 8:00 बजे तक तैयार हो गए थे, दूसरे दिन की रोमांचक यात्रा के लिए। कैंटीन में नाश्ता करने के बाद हम चेक आउट कर दिए और गाड़ी में बैठ गए। नाश्ता करने के दौरान पता चला कि नई दिल्ली से दो बड़े ऑफिसर वहां पहुंचे थे। अब हम दूसरे दिन के सफर के लिए निकल पड़े। जंगल में गाड़ी धीरे-धीरे जा रही थी। तरह-तरह के जानवरों के झुंड को देखने का मौका मिला। पहले बहुत सारे हिरणों के झुंड देखे। गाड़ी की आवाज सुनकर कुछ हिरण जंगल के अंदर चले जा रहे थे। कुछ देर बाद सांभर और मोर के झुंडों को करीब से देखा। जंगल के मुख्य रास्ते से कभी-कभी छोटे रास्ते जंगल के कोर क्षेत्र को जा रही थीं लेकिन आम जनता के लिए उस रास्ते से कोर क्षेत्र को जाने पर प्रवेश निषेध था। दिल्ली से आए हुए अधिकारी और वन विभाग की दो गाड़ियां जो हमारे आगे-आगे जा रही थीं, उसी रास्ते से वन में प्रवेश किया। पूछने पर पता चला कि कोर क्षेत्र में शेर अधिक मात्रा में पाए जाते हैं। थोड़ी निराशा के साथ हम आगे बढ़े, अब हमारी गाड़ी एक खुले जगह पर पहुंच गयी थी, जहां एक-दो पुरानी इमारतों के साथ कुछ छोटे-बड़े मकान भी देखने को मिले। अब हम बहुत ही लोकप्रिय झरने के सामने खड़े हुए थे जिसका नाम 'बरेहिपानी' था। वहाँ एक टावर भी था। उस टावर के सामने एक दीवार-सी बनी हुई थी और सामने वाली पहाड़ी से बरेहिपानी झरने से गिरती धाराएँ बहुत ही आकर्षक थी। वहां मौजूद कुछ लोगों से पता चला कि वह पुरानी टूटी-फूटी इमारत राजा-महाराजाओं का शिकार करने के दौरान विश्राम करने का स्थान था। बरेहिपानी में कुछ सेल्फियां लेने के बाद थोड़ी मुंगफली खरीद लिया और बैठे-बैठे मुंगफलियों का स्वाद लेने लगे। सफर को जारी रखते हुए हम आगे निकल पड़े। जंगल का शांत और सुनसान माहौल दिल और दिमाग को एक अलग-से ख्यालों में खो जाने के लिए मजबूर कर रहा था। कुछ देर बाद हम विस्थापित होने वाले गाँवों से गुजरे और पिछले दिन की तरह कुछ बच्चे हमारी गाड़ी के पीछे भागने लगे। गाड़ी में रखे कुछ स्नैक्स पैकेट उन बच्चों को देकर हम आगे निकल पड़े। अब हम एक खुले मैदान जैसी जगह पर आ पहुंचे थे। सामने एक छोटा सा झरना था। झरने के अंदर जाकर बड़े-बड़े पत्थरों के ऊपर बैठ गए और बहते हुए निर्मल पानी का आनंद उठाया। कुछ देर बैठने के बाद हम आगे निकल पड़े और कुछ देर जंगल के उबड़-खाबड़ और टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर चलते रहे। उसी दिन और कुछ जंगली जानवरों को देखने का मौका मिला, जिसमें कुछ चौसिंगा, चित्तीदार हिरण, बंदर, एक-दो खरगोश थे। जंगली जानवरों को इतने करीब से देखकर हम बहुत आनंदित हो रहे थे और खुद को खुशनसीब समझ रहे थे। जंगल के बीच में सफर करने के दौरान तरह-तरह के पक्षियों को देखने का मौका भी मिला। अब करीब दोपहर के डेढ़ (1:30) बज चुके थे और हम जंगल के एक शिखर पर पहुंच चुके थे। वहां से जंगल और पहाड़ों का नजारा बहुत ही अनोखा और मनोरम था। आसपास की एक-दो जगहें देखने के बाद अब जंगल से निकलने का समय आ गया था और भूख भी लग रही थी। समय दोपहर के 2:15 हो चुके थे। हमलोग दूसरी वाली वाली गेट यानि लुलुंग वाली गेट से निकलने वाले थे जो वहां से लगभग 15-20 किलोमीटर की दूरी पर था और गेट से बारीपदा शहर लगभग 20 किलोमीटर दूरी पर था। कुछ देर जंगल के रास्ते से सफर करने के बाद हमलोग खुले मैदान और गांव से घिरे रास्ते से सफर कर रहे थे। गांव के रास्ते से गुजरते समय हमलोगों ने खीरा खरीद कर खाया। लुलुंग गेट से निकलने के दौरान, समय करीब 3:15 हो चुका था। हम सब पिछले दो दिनों के सफर के बारे में सोच रहे थे और इस रोमांचक यात्रा के हर एक पल को अपनी यादों में कैद करने की कोशिश कर रहे थे।

तुम मेरी कविता हो

सुश्री सौमि बिस्वास
सुपुत्री- श्री सुदीप कुमार बिस्वास, वरि. लेप.अ

जब भी मैं कविता लिखती हूँ,
मेरे दिल के कैनवास पर सिर्फ़ एक ही छवि तैरती है
वो सिर्फ़ तुम हो।
जब मैं कविता लिखने जाती हूँ,
तो सिर्फ़ तुम्हारे बारे में सोचती हूँ।
सिर्फ़ तुम और तुम।

मैं तुम्हारे साथ बिताए एहसासों को
कविता की लय में लिखती हूँ।
कविता के उन कठोर शब्दों में,
तुम्हारे स्पर्श से घुले हुए विचार
तुम्हारे नाम में समाए हुए लगते हैं,
लेख सिर्फ़ तुम्हें जानते हैं।
सारे शब्दों के भ्रम में,
सिर्फ़ तुम और तुम।
मानो तुम्हारे दिल की गहराइयों में,
लिखे हुए सिर्फ़ तुम्हारे एहसास हैं।
जब मैं तुम्हारी लय की गहराई में खो जाती हूँ,
जब मुझे थोड़ा सा स्पर्श मिलता है,
मैं अपने विचारों से जाग उठती हूँ।
सभी भावनाएँ तुम्हें घेर लेती हैं,
तुम शब्दों के ज्वार में घुल-मिल जाते हो,
सिर्फ़ तुम और तुम।

बिरसा मुंडा अंतर्राष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम-राउरकेला

श्री गोबिन्द दीप
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

आप जानते हैं हॉकी इंडिया के वर्तमान प्रेसिडेंट और भारत के अंतर्राष्ट्रीय हॉकी दल के पूर्व कप्तान दिलीप तिर्की तथा टोक्यो ओलंपिक 2022 में कांस्य पदक विजेता रहे भारतीय हॉकी दल के उप कप्तान अमित रोहिदास एबं वीरेंदर लाकड़ा, प्रबोध तिर्की, इग्नास तिर्की, सुभद्रा प्रधान, दिप्सान तिर्की, सुनीता लाकड़ा, लाज़ूस बारला, दीप ग्रेस लाकड़ा, लिलिमा मिंज, नमिता टोप्पो आदि हॉकी के अंतर्राष्ट्रीय खिलाडियों में खास बात क्या है? जी हाँ, ये सब भारतीय हॉकी का उद्गम स्थल कहे जाने वाले ओडिशा राज्य के सुंदरगढ़ जिले से आते हैं । इस जिले से अब तक सौ से भी अधिक खिलाडी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की ओर से खेलकर आज भारत को एक बेहतर दल के रूप में विश्वपटल पर प्रस्तुत कर चुके हैं ।

सुन्दरगढ़ जिले के आदिवासियों के लिए हॉकी सिर्फ एक खेल नहीं, जीवन जीने की राह है और जीविका का माध्यम भी है। इस जिले से बारह सौ से चौदह सौ हॉकी खिलाड़ी विभिन्न राज्य तथा केंद्र सरकार एवं विभिन्न निजी संस्थानों में हॉकी की सेवा में रत हैं ।

हॉकी के पौधशाला कहे जाने वाले इस सुंदरगढ़ जिले के लिए वह दिन अत्यंत उत्साहपूर्ण था, जब ओडिशा सरकार की विश्व कप हॉकी पुरुष चैंपियनशिप 2023 की मेजबानी करने की दावेदारी मान ली गयी और इस चैंपियनशिप के आयोजन के लिए ओडिशा के इस्पात नगरी, सुंदरगढ़ जिले में स्थित राउरकेला में एक और अंतर्राष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम निर्माण करने का निर्णय लिया गया । राजधानी भुवनेश्वर स्थित कलिंगा हॉकी स्टेडियम 2018 का विश्व कप चैंपियनशिप आयोजित कर चुका है। महान आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी, बिरसा मुंडा के नाम पर बने राउरकेला हॉकी स्टेडियम के बनने की कहानी भी बड़ी रोचक है ।

स्टेडियम के निर्माण की जिम्मेदारी ओडिशा औद्योगिक अवसंरचना विकास निगम (IDCO) को सौंपी गई। निगम को एक विशाल विश्व स्तरीय स्टेडियम के निर्माण के लिए केवल बारह महीने का समय दिया गया। फरवरी 2021 में इसकी नींव रखी गई। राउरकेला के छेंड कोलोनी के पीछे बीजू पटनायक प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के परिसर में विशाल 50 एकड़ पर बना यह स्टेडियम महज़ 15 महीनो में तैयार कर लिया गया। बिरसा मुंडा हॉकी स्टेडियम और इसकी अत्याधुनिक सुविधाओं के निर्माण में देश भर से 1,000 से अधिक श्रमिक शामिल थे। इस विशाल सुन्दर स्टेडियम की कुछ विशेषताओं में हॉकी के लिए दो विश्वस्तरीय अंतर्राष्ट्रीय हॉकी संघ (एफआईएच) अनुमोदित टर्फ के अलावा व्यायामशालाएं और विश्व कप विलेज, ड्रेसिंग रूम, सॉना, अभ्यास मैदान, फिटनेस सेंटर, स्विमिंग पूल, ड्रेसिंग रूम और रिकवरी सेंटर आदि सुविधाओं के साथ बने आवास शामिल हैं। स्टेडियम में दो स्तर हैं - ऊपरी बाउल और निचला बाउल। विभिन्न देशों से आने वाले खिलाड़ियों और सहायक कर्मचारियों के लिए स्टेडियम परिसर विश्व कप गाँव में कुल 225 कमरे बनाए गए हैं, जहाँ आठ दल के विभिन्न सदस्य एक साथ रह सकते हैं। स्टेडियम में प्रैक्टिस पिच को टनल के माध्यम से मुख्य स्टेडियम से जोड़ा गया है, जिससे खिलाड़ियों का निरंतर और सुरक्षित आवागमन संभव होता है। आकर्षक मेटैलिक व वक्रित बाहरी संरचना स्टेडियम को बाहर से अति आकर्षक बनाती हैं।

स्टेडियम में दिव्यांगजनों के लिए रैंप की सुविधा की गयी है, वे किसी भी गेट से स्टेडियम में प्रवेश कर सकते हैं। दीर्घा में बैठने की व्यवस्था इस तरह से की गई है कि प्रशंसक स्टेडियम में कहीं भी बैठे हों, वो आराम से मैच देख सकते हैं। वाहनों से स्टेडियम जाने वाले प्रशंसकों के लिए स्टेडियम के 100 मीटर के दायरे में छह प्रवेश द्वारों के सामने छह विशाल पार्किंग स्थल बनाए गए हैं। पार्किंग स्थल से स्टेडियम तक के रास्ते को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि प्रशंसकों को स्टैंड तक पैदल चलने में मजा आ जाए। हॉकी की सच्ची भावना को समाहित करने वाली सुंदर कला दीवारों पर देखने को मिलती है। दर्शकों को अपनी सीटों तक सुविधा से पहुँचने के लिए हर जगह नेविगेशन बोर्ड लगाए गए हैं।

बिरसा मुंडा हॉकी स्टेडियम में 20,011 दर्शकों के बैठने की क्षमता है। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने आधिकारिक तौर पर बिरसा मुंडा हॉकी स्टेडियम को दुनिया का सबसे बड़ा पूर्णतः बैठकर देखने वाले हॉकी स्टेडियम के रूप में मान्यता दी है। दूसरे बड़े स्टेडियम, जैसे कि लाहौर स्थित राष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम, चंडीगढ़ हॉकी स्टेडियम और लॉस एंजिल्स स्थित वेइंगार्ट स्टेडियम में ज़्यादा लोग बैठ सकते हैं क्योंकि इनमें छत पर बैठने की व्यवस्था है। यानी दर्शक कंक्रीट के बड़े-बड़े विस्तार पर बैठते हैं। हालाँकि, बिरसा मुंडा हॉकी स्टेडियम में 20,011 बकेट सीटें हैं, जो इसे अपनी तरह का सबसे बड़ा स्टेडियम बनाती हैं। विश्व का चौथा बड़ा यह हॉकी स्टेडियम केवल ओडिशा नहीं, भारत देश का गौरव है।

बिरसा मुंडा अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम विशेष रूप से विश्व कप हॉकी चैंपियनशिप 2023 के आयोजन लिए निर्मित किया गया था। इस चैंपियनशिप के कुल 44 मैचों में से 20 मैच राउरकेला में खेले गए। पहला मैच भारत और स्पेन के बीच 13 जनवरी को खेला गया। उद्घाटन समारोह में शुभंकर ओली के साथ खेल मंत्री अनुराग ठाकुर, अंतर्राष्ट्रीय हॉकी संघ के अध्यक्ष तैय्यब इकराम और ओडिशा के तत्कालीन मुख्यमंत्री नवीन पटनायक उपस्थित थे। राउरकेला इस्पात संयंत्र और हवाई अड्डा प्राधिकरण के सम्मिलित उद्यम से स्टेडियम के निकट जो एक छोटी सी हवाई पट्टी थी, उसे एक चालू एयरपोर्ट में परिवर्तित किया गया। इस नवविकसित राउरकेला हवाई अड्डे का उपयोग एफआईएच विश्व कप के लिए यात्रा करने वाले खिलाड़ियों, कर्मचारियों और अधिकारियों के लिए पारगमन केंद्र के रूप में किया गया। न केवल आयोजन स्थल बल्कि पूरे राउरकेला शहर को स्थानीय नगरपालिका द्वारा जीर्णोद्धार और सौंदर्यीकरण कार्य के साथ विश्व कप के लिए सजाया गया था। राउरकेला के प्रसिद्ध पानपोष बाजार का पुनरुद्धार किया गया। राउरकेला के हनुमान वाटिका रोड को पानपोश चौक से जोडती हॉकी चौक में हॉकी खेलते हुए खिलाडियों की मूर्तियाँ लगाई गई। चैंपियनशिप के समय राऊरकेला शहर की सुन्दरता देखते बनती थी। पूरा शहर हॉकीमय हो गया था। पूरे शहर को नई दुल्हन की तरह सजाया गया था। विश्व कप चैंपियनशिप 2023 के उपरांत दो एफआईएच प्रो लीग पुरुष टूर्नामेंट और एक एफआईएच प्रो लीग महिला टूर्नामेंट अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एवं एक हॉकी इंडिया लीग राष्ट्रीय स्तर पर बिरसा मुंडा अंतर्राष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम पर खेले जा चुके हैं।

इस्पात नगरी राउरकेला शहर ओडिशा के पुराने शहरों में से एक है। झारखण्ड से सटा यह आधुनिक शहर रेलसेवा तथा उड़ान सेवा से देश के अन्य हिस्सों से जुड़ा हुआ है। शहर में छोटे-बड़े हर बजट के होटल मिल जाते हैं। शहर के आसपास कई मनोरम पर्यटन स्थल अवस्थित हैं। शंख और कोयल नदी के संगम स्थल पर वेदव्यास पीठ में पूरे एक महीने श्रावण मेला लगता है। मंदिरा डैम, शैव पीठ, गोघर धाम, रानी सती मंदिर, हनुमान वाटिका अदि प्रमुख मनमोहक पर्यटन स्थल है। अगली बार जब किसी चैंपियनशिप का आयोजन इस अंतर्राष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम में हो तो इस विशाल भव्य स्टेडियम में एक अंतर्राष्ट्रीय मैच देखने के आनंद के साथ-साथ आसपास के पर्यटन स्थलों का आनंद भी लिया जा सकता है।

एक पेड़ की कहानी

सुश्री हर्षिता साहु
सुपुत्री- श्री महेश्वर साहु, वरि. लेप.अ

मैं मसूरी में एक पहाड़ के किनारे एक पुराना देवदार का पेड़ हूं। मैं खुद से उगा हूं। मेरे पास के सारे पेड़ भी मेरे जैसे अपने आप उगे हैं। सालों पहले मसूरी एक शांत जगह हुआ करता था। मेरे सामने पहाड़ों पर बहुत सारे फूल खिलते थे। हर सुबह फूलों की कलियां मुझे जगाती थीं। मसूरी में आने वाले पर्यटक इस हिल स्टेशन को देख आश्चर्यचकित हो जाते थे। मैं इस जगह की प्रसिद्धि का बहुत श्रेय लेता हूं, जहां हम बड़े हुए थे लेकिन अब वह समय आ गया है जब मेरे दिल में डर समा गया है। हमने देखा है कि हममें से बहुत पेड़ों को यहां के लोगों और बिल्डरों ने काट डाला। यह देख मुझे जो दुख होता है, वह शब्दों में नहीं बताया जा सकता। मुझे नहीं पता कि वे हमें अभी हटाएंगे या बाद में, पर मुझे यह जरूर पता है कि मैं एक प्राकृतिक मौत से नहीं मरूंगा। मुझे उनलोगों के हाथ से मरने के लिए अपने आप को तैयार करना ही पड़ेगा।

सब कहते हैं कि मनुष्य एक ज्ञानी जीव है लेकिन भला ऐसा कौन सा ज्ञानी है, जो अपने पैर पर खुद ही कुल्हाड़ी मार रहा है। मशीनों से अपने ही घर तोड़े जा रहे हैं। हमारे लगातार कम होते जाने के कारण पहाड़ ढहकर गिरते जा रहे हैं। बताओ, अगर हम ही ना रहें तो इन पहाड़ों को कौन बचाएगा। एक बार हम चले गए तो कोई कभी भी मेरी शाखों के बीच से गुजरती हवा की आवाज नहीं सुन पाएगा। जब हवा में सांस घटने लगेगी, जब धरती तपने लगेगी तब शायद उन्हें हमारी कीमत समझ आएगी पर तब तक हम नहीं होंगे उनकी भूल सुधारने के लिए। मुझे उसी धरती की ताजी हवा का आनंद लेने दो जहां मैं पैदा हुआ हूं। मैं भी अपने गर्व में ऊंचा उठाना चाहता हूं, जब सैकड़ों आंखें मेरी सुंदरता पर आश्चर्यचकित होंगी। हर सुबह मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि इन इंसानों को सद्बुद्धि दें। मैं प्रार्थना करता हूं कि वे हमें भी जीने दें और हमारे और उनके रहने के लिए इस धरती को एक सुंदर और स्वस्थ स्थान बनाएं ।

जगदलपुर- पूर्व तट रेलवे का एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल

श्री सुदीप कुमार बिस्वास
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

जगदलपुर शहर छत्तीसगढ़ राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित है। यह प्राचीन शहर पहले बस्तर रियासत की राजधानी हुआ करता था। यह पूर्व तट रेलवे का एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है। जगदलपुर अपनी प्राकृतिक सुंदरता, जैसे झरनों, राष्ट्रीय उद्यानों, गुफाओं और मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है।

बचपन में भूगोल की किताबों में पढ़े झरनों को देखने के लिए जगदलपुर आना चाहिए। मानसून के बाद जगदलपुर पहाड़ियाँ, जंगल, नदियाँ और झरने हरियाली से आच्छादित हो जाते हैं। मेरी विशाखापत्तनम पोस्टिंग के दौरान मैंने इस जगह का कई बार दौरा किया।

जगदलपुर अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ चित्रकोट जलप्रपात, कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान, तीरथगढ़ जलप्रपात और कांगेर धारा जलप्रपात जैसे आकर्षण स्थित हैं।

जगदलपुर की असली खूबसूरती चित्रकूट जलप्रपात में है। चित्रकूट जलप्रपात 38 किलोमीटर दूर इंद्रावती नदी पर स्थित है। यह जलप्रपात जगदलपुर के सुदूर पश्चिम में स्थित है। इंद्रावती नदी घोड़े के खुर के आकार के एक संकरे रास्ते से होकर 95 फीट की ऊँचाई से सीधी गिरती है।

चित्रकूट को झरने की खूबसूरती के कारण भारत का नियाग्रा कहा जाता है। यह 'भारतीय नियाग्रा' बरसात के मौसम में अपना विकराल रूप धारण कर लेता है। हालाँकि, अगर आप अक्टूबर में भी यहाँ जाएँ तो निराश नहीं होंगे। जगदलपुर से चित्रकूट 25 किलोमीटर दूर है। चित्रकूट जलप्रपात को 'मिनी तीर्थगढ़' भी कहा जाता है।

जगदलपुर से 30 किलोमीटर दूर तीर्थगढ़ जलप्रपात है। यह जलप्रपात कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान में स्थित है। तीर्थगढ़ जलप्रपात कांगड़ा नदी पर स्थित एक खंडाकार झरना है। झरने के आसपास का क्षेत्र स्थानीय जनजातियों द्वारा पवित्र माना जाता है और अक्सर स्थानीय मिथकों और किंवदंतियों से जुड़ा होता है। समय के साथ, तीर्थगढ़ जलप्रपात अपनी प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक महत्व, दोनों के कारण एक प्रिय स्थल बन गया है।

जगदलपुर प्राकृतिक सौंदर्य और ऐतिहासिक धरोहरों का एक अद्भुत संगम है। यह पर्यटकों

के लिए एक आकर्षक स्थल है। कुटुमसर गुफा छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में कांगड़ घाटी राष्ट्रीय उद्यान में स्थित एक प्राकृतिक चूना पत्थर की गुफा है। कुटुमसर गुफा तीर्थगढ़ जलप्रपात से 6 किलोमीटर दूर है। यह भारत की सबसे लंबी प्राकृतिक गुफाओं में से एक है और अपनी अनूठी जैव विविधता और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। कुटुमसर गुफा की खोज ब्रिटिश काल में हुई थी लेकिन इसे मान्यता 1950 के बाद ही मिली। इसे पहले गोपनसर गुफा के नाम से जाना जाता था, जिसका अर्थ है "छिपी हुई"। गुफा

की मुख्य सुरंग 200 मीटर लंबी है और इसमें नीचे की ओर जाने वाले कई रास्ते हैं। कुटुमसर गुफा में एक खड़ी दरार से प्रवेश किया जा सकता है जो एक कृत्रिम कंक्रीट पथ पर ले जाती है, जिसे गुफा के अंत तक पहुँचने के लिए पर्यटकों की सुविधा के लिए बनाया गया है। यहाँ कुछ विशेष प्रकार की मछलियाँ और अन्य जानवर देखे जा सकते हैं, जिन्होंने अंधेरे के साथ तालमेल बिठा लिया है। विशेष रूप से, यहाँ सफेद कैटफ़िश देखी जा सकती है, जो बिना प्रकाश के भी जीवित रह सकती है।

दंतेश्वरी माई का मंदिर जगदलपुर के दक्षिण-पश्चिम में दंतेवाड़ा में पवित्र शंखिनी और धनकिनी नदियों के संगम पर स्थित है, जिनके रंग अलग-अलग हैं। यह छह सौ साल पुराना मंदिर भारत के सबसे पुराने विरासत स्थलों में से एक है और बस्तर क्षेत्र के धार्मिक-सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है।

ऐसा माना जाता है कि यहाँ सती का एक दांत गिरा था और यहीं दंतेश्वरी शक्तिपीठ की स्थापना हुई। प्राचीन कथा के अनुसार, देवी सती ने अपने पिता दक्ष द्वारा यज्ञ के दौरान अपनी पत्नी भगवान शिव का अपमान करने के कारण यज्ञ कुंड की अग्नि में आत्मदाह कर लिया था। सती की मृत्यु से क्रोधित होकर शिव ने दक्ष के यज्ञ को नष्ट कर दिया और सती के शरीर को अपने हाथों में लेकर तांडव करना शुरू कर दिया। भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से देवी सती के शरीर के टुकड़े कर दिए ताकि शिव उनकी मृत्यु के शोक से मुक्त हो सकें। देवी सती के शरीर के अंग बावन अलग-अलग स्थानों पर बिखर गए, विश्वास के अनुसार दंतेवाडा में सती का दांत गिरा इसी कारण यहां दंतेश्वरी शक्तिपीठों के रूप में प्रतिष्ठित किया गया।

भारत के अधिकांश हिस्सों में इस मंदिर के बारे में बहुत कम जानकारी है। आज यह विशाल मंदिर परिसर सचमुच सदियों पुराने इतिहास और परंपरा का एक स्थायी स्मारक है। अपनी समृद्ध स्थापत्य कला और मूर्तिकला तथा जीवंत त्यौहार परंपरा के साथ, दंतेश्वरी माई मंदिर इस क्षेत्र के लोगों के लिए सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक केंद्र के रूप में कार्य करता है।

झील के किनारे लालटेन

सुश्री ऐश्वर्या परिडा
सुपुत्री- श्री निरंजन परिडा, स.लेप.अ.

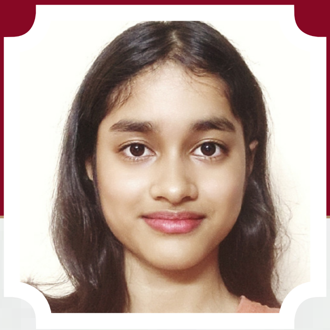

एक शांत गाँव के किनारे पर एक झील थी, जिसकी सतह चांदनी रात में कांच की तरह चमक रही थी। हर शाम मीरा नाम की एक बूढ़ी औरत एक छोटी सी लालटेन लेकर वहाँ आती थी। वह उसे पानी में बहा देती और उसे बहते हुए तब तक देखती रहती जब तक कि वह रात में गायब न हो जाए। उत्सुकतावश आरव नामक एक युवा लड़के ने एक बार उसका पीछा किया। "तुम लालटेन क्यों पानी में बहा देती हो?", उसने पूछा।

मीरा धीरे से मुस्कुराई. "कई साल पहले, मेरा बेटा अपने सपनों की तलाश में चला गया था। मैंने उससे वादा किया था कि एक रोशनी हमेशा उसका मार्गदर्शन करेगी। हालाँकि मैंने उसे तबसे नहीं देखा है लेकिन मैं अपना वादा निभा रहा हूँ।"

आरव ने उसकी बातों के बारे में सोचा और अगली रात अपनी लालटेन लेकर नदी के किनारे गया और उसे बहा दिया। जल्द ही, गाँव के अन्य लोग भी इसमें शामिल हो गए। झील दर्जनों बहती रोशनी से जगमगाने लगी, जिनमें से प्रत्येक में एक मौन इच्छा या स्मृति थी।

एक शाम जब लालटेनें तैर रही थीं, किनारे पर एक आकृति दिखाई दी। यह मीरा का बेटा था, उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

"मैंने दूर से रोशनी देखी'', वह फुसफुसाए।

उस रात झील में सिर्फ लालटेन ही नहीं बल्कि निभाए गए वादे की गर्माहट और लंबे समय से प्रतीक्षित घर वापसी की खुशी भी झलक रही थी।

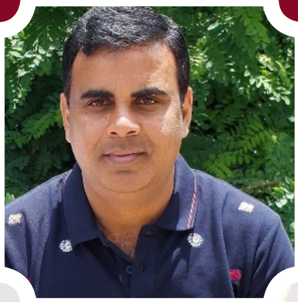

शीतल षष्ठी: संबलपुर का प्रमुख त्योहार

श्री प्रशांत कुमार मेहर
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

शीतल षष्ठी संबलपुर, ओड़िशा का एक प्रमुख त्योहार है, जो भगवान शिव और देवी पार्वती के विवाह का प्रतीक है। यह त्योहार ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि को मनाया जाता है, जो आमतौर पर मई-जून के बीच पड़ता है। इस त्योहार का महत्व इसलिए है क्योंकि यह भगवान शिव और देवी पार्वती के दिव्य मिलन का प्रतीक है, जो पुरुष और प्रकृति के मिलन का प्रतिनिधित्व करता है।

शीतल षष्ठी का इतिहास लगभग 400 वर्ष पुराना है, जब संबलपुर के राजा बलियार सिंह ने उत्कलिया ब्राह्मणों को आमंत्रित किया था। इस त्योहार की शुरुआत बलिबंधा के सोमेश्वर बाबा मंदिर से हुई थी, जो वर्तमान समय में संबलपुर का एक प्रमुख आकर्षण स्थल है। समय के साथ, यह त्योहार संबलपुर के विभिन्न मंदिरों में मनाया जाने लगा, जिनमें नंदापाड़ा, झाड़ूपाड़ा और मोदीपाड़ा प्रमुख हैं।

शीतल षष्ठी के दौरान कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें भगवान शिव और देवी पार्वती की विवाह प्रक्रिया, सांस्कृतिक कार्यक्रम, और लोक नृत्य प्रमुख हैं। इस त्योहार के दौरान संबलपुर की सड़कें सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के जीवंत कैनवास में बदल जाती हैं। विभिन्न लोक नृत्य रूप, जैसे गौरबारी, कलास नृत्य, पाइका अखाड़ा, पशु नृत्य, बाजा सालिया, चैती घोड़ा, सम्पदा, पर्व नृत्य, जो गुमनामी में लुप्त हो रहे थे, उत्सव के दौरान फिर से जीवंत हो उठते हैं।

यह त्योहार संबलपुर की सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसे मनाने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। मनुष्य के जन्म का उद्देश्य ही यही है कि वह प्रकृति से साथ अपने संबंध को समझे और प्रकृति का भोक्ता न बन कर प्रकृतिस्थ हो जाए। इस दृष्टि से शीतल षष्ठी जैसे पर्व मानव अस्तित्व को गहराई से समझने में सहायक होते हैं। साथ ही यह उस प्रदेश की समृद्ध संस्कृति भी बयान करते हैं।

साथी

श्रीमती माधुरी हालदार
पत्नी- श्री मिन्टू हालदार, लेखापरीक्षक

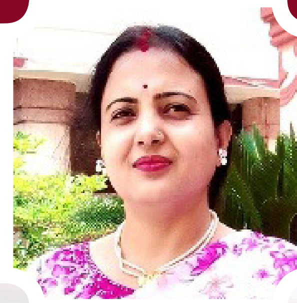

रेल हमारी साथी है।
सीटी बजाती आती है
फिर हमको ले जाती है।
स्टेशन से गुजरकर
यात्रा के हर रंग हमें दिखलाती है।
नदियों, पहाड़, झरनों से होकर
मन को मेरे लुभाती है।
हर मज़हब के लोगों से मेल हमारा कराती है।

रेल हमारी साथी है।
सीटी बजाती आती है।
हर स्टेशन पर अलग-अलग
व्यंजन का स्वाद चखाती है।
बड़ी-बड़ी नदियों के सेतु से गुजरकर जाती है।
मंजिल को पाने की खातिर कभी न रुकने पाती है।
बच्चों की यह शान है देखो
देश की जैसे जान है देखो।

रेल हमारी साथी है।
सीटी बजाती आती है।
कश्मीर से कन्याकुमारी तक देखो
लालकिला, वृंदावन, तिरुपति हमें दिखलाती है।
इसमें जो यात्रा न कर पायेगा।
वह अपनी मंजिल से वंचित रह जायेगा ।

तृप्ति

श्री मिन्टू हालदार
लेखापरीक्षक

दफ्तर में सबलोग अपने-अपने काम में बहुत व्यस्त हैं। साढ़े दस बजे के बाद, सागर दफ्तर में प्रवेश करता है। प्यून ने सागर से कहा, "नए साहब ने आपको बुलाया है।" प्यून की बात सुनकर सागर ने डरते हुए साहब के कमरे में प्रवेश किया। साहब ने सागर को देखकर बहुत गुस्से में कहा, "क्या यही वक्त है दफ्तर आने का?" सागर ने कहा, "नहीं-नहीं सर, घर में मुझे कुछ खास काम था। इसलिए थोड़ी देर हो गई है। मुझे माफ कर दीजिए साहब।"

"अच्छा ठीक है। आगे ऐसा मत करना, जाओ। अपना काम करो," कहकर सागर का चेहरा बार-बार देखकर सोच में पड़ गए गुप्ताजी।

शाम छः बज गए। सबलोग चले गए। सागर ने भी बाहर चलने की कोशिश की लेकिन गुप्ताजी की आवाज सुनकर जरा रूक गया और पूछा कि आपने मुझे बुलाया?

"हां, आपको मैंने कहीं देखा है। लेकिन याद नहीं आ रहा है," गुप्ताजी बोले।

"हां साहब। आपने ठीक कहा। हम दोनों बारहवीं में एक साथ पढ़े हैं लेकिन मेरे पिताजी ने आगे पढ़ने का मौका नहीं दिया। मगर आपके पिताजी ने आपको इंजीनियरिंग पढ़ाया। इसलिए आप इस दफ्तर के मालिक बन गए। मैं साधारण नौकर बन गया हूं। मेरे पिताजी जैसा किसी को नहीं होना चाहिए। आज उनकी वजह से मैं इस हालत में हूँ।"- बहुत दुख से सागर ने गुप्ताजी से कहा।

"ऐसा मत कहो। उस समय तुम्हारे पिताजी बहुत गरीब थे इसलिए तुम्हें आगे पढ़ने नहीं दिया। चिंता मत करो। अब चलो। मैं तुमको घर तक छोड़ूंगा"- प्यार से गुप्ताजी बोले।

"नहीं, मैं पैदल चला जाऊंगा," कहकर सागर दफ्तर से निकल गया।

सुबह, सागर अपने परिवार के साथ एक दोस्त की लड़की की शादी के लिए रेलगाड़ी से पुणे गया। पुणे पहुंचने में बहुत देर हो चुकी थी। स्टेशन पर टैक्सी नहीं थी। केवल रिक्शा था। सागर ने रिक्शावाले को बुलाया। "बोलो साहब, आपको कहां जाना है?" रिक्शेवाले ने सागर से पूछा।

"मुझे इस पते पर जाना है," सागर ने पॉकिट से विवाह पत्र निकालकर रिक्शावाले को दिखाया और पूछा, "तुम कितना पैसा लोगे?"

"जो आपकी मर्जी," रिक्शावाला बोला।

"बीस रूपए दे दूंगा। बाद में झगड़ा नहीं करना है"- सागर ने सीधा बोल दिया। "अच्छा साहब, चलो," कहकर सागर और उसके परिवार को उसने दोस्त के घर पर छोड़ दिया। सागर ने रिक्शावाले को बीस रूपए दे दिया।

रिक्शावाला बीस रूपये लेकर दुकान में जाकर दो चाकलेट खरीदकर लाया और सागर के बच्चों के हाथ में दे दिया। सागर इसे बहुत हैरानी से देख रहा था। रिक्शावाले से पूछा, "यह तुम क्या कर रहे हो? पागल तो नहीं हो।"

"नहीं साहेब। शायद आपने मुझे पहचाना नहीं। मैं आपका दोस्त राम हूं। मैं आपके साथ पाँचवी क्लास तक पढ़ा हूं। गरीब होने की वजह से मेरे पिताजी ने आगे नहीं पढ़ने दिया लेकिन मैंने पिताजी को गलत नहीं माना। अब यह जिंदगी मुझे अच्छी लगती है और खुशी भी है", कहकर राम निकल गया।

राम की बात सुनकर सागर का मन शान्त हो गया। अपने पिताजी पर गुस्सा निकल गया। मन ही मन पिताजी से माफी मांगी।

जिज्ञासु लड़की

श्री निरंजन परिडा
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

सुनीता एक जिज्ञासु लड़की थी, जिसे सवाल पूछना बहुत पसंद था। उसका मानना था कि हर गलती में एक सबक छिपा होता है। एक बार गर्मी के छुट्टियों में, उसके स्कूल में विज्ञान मेले की घोषणा हुई। उत्साहित सुनीता ने एक छोटी पवनचक्की बनाने का फैसला किया, जो बिजली पैदा कर सके। उसने एक किताब में ऐसी पवनचक्की देखी थी और सोचा, "यह कितना मुश्किल हो सकता है"।

पहले तो उसने कार्डबोर्ड, लकड़ियाँ और एक छोटी मोटर इकट्ठा की। वह दिन-रात काम करती रही, यह सोचकर कि उसे कितनी वाहवाही मिलेगी लेकिन जब उसने आखिरकार अपनी पवनचक्की का परीक्षण किया तो उसके ब्लेड मुश्किल से हिले। उसने जो बल्ब लगाया था, वह भी नहीं जला। उसका उत्साह जल्द ही निराशा में बदल गया।

एक पल के लिए, उसने हार मान ली लेकिन फिर उसके शिक्षक के शब्द उसके दिमाग में गूंज उठे, "असफलता अंत नहीं है, यह सीखने की पहली सीढ़ी है।" सुनीता ने फिर से कोशिश करने का फैसला किया। उसने ऑनलाइन सर्च किया, अपने विज्ञान शिक्षक से सवाल पूछे और असली टर्बाइनों को देखने के लिए एक स्थानीय कारखाने में भी गई। उसने सीखा कि ब्लेड का आकार, कोण और सामग्री बहुत मायने रखती है।

धीरे-धीरे उसने अपने मॉडल को फिर से डिज़ाइन किया। कार्डबोर्ड की जगह, उसने हल्के प्लास्टिक का इस्तेमाल किया। उसने हवा को बेहतर ढंग से पकड़ने के लिए ब्लेड को एडजस्ट किया और मोटर को ठीक से जोड़ा। कई कोशिशों के बाद एक शाम जब उसने अपनी पवनचक्की पंखे के पास रखी तो छोटा बल्ब मंद-मंद चमक उठा। उसकी आँखें खुशी से फैल गईं। वह मंद रोशनी सूरज से भी ज़्यादा तेज़ लग रही थी—यह धैर्य, प्रयास और सीखने का नतीजा था।

विज्ञान मेले वाले दिन, सुनीता का प्रोजेक्ट बहुत बड़ा नहीं था लेकिन उसने कमाल कर दिया। जब उसने बताया कि वह कैसे असफल हुई, कैसे शोध किया और फिर से कोशिश की तो निर्णायक बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने कहा कि उसके प्रोजेक्ट में न केवल विज्ञान बल्कि दृढ़ संकल्प भी झलकता है। उसे प्रथम पुरस्कार तो नहीं मिला लेकिन उसे "सर्वश्रेष्ठ सीखने की यात्रा" के लिए एक विशेष पुरस्कार मिला।

उस रात, जब उसने अपना प्रमाणपत्र पकड़ा, तो सुनीता को एक ज़रूरी बात का एहसास हुआ: सफलता हमेशा जीतने के बारे में नहीं होती; बल्कि आगे बढ़ने के बारे में होती है। उसने सीखा कि गलतियाँ छद्म शिक्षक की तरह होती हैं, जो हमें सुधार की ओर ले जाती हैं।

उस दिन के बाद से सुनीता को फिर कभी असफलता का डर नहीं लगा। इसके बजाय उसने इसे अपनी सीखने की कहानी के एक हिस्से के रूप में स्वीकार किया।

वो जो लौटकर नहीं आया

सुश्री श्रद्धा राउत
सुपुत्री-पूर्ण चंद्र राउत, लेखापरीक्षक

शांति सुबह की चाय बना रही थी पर उसकी नजर दरवाजे की तरफ बार-बार जाती है- मानो जैसे कोई आने वाला हो। शांति की सुबह चिड़ियों की चहचहाहट और पानी के कल-कल की आवाज से शुरू होती है। वह एक ऐसे गांव में रहती है जहां दूर-दूर तक कोई परेशान करने वाली गाड़ी की आवाज और शोर-शराबा नहीं पहुंचता था। हरियाली और प्रकृति से घिरा हुआ यह गांव मन को इतना सुकून देता था कि मानो स्वर्ग हो।

मगर फिर भी उसकी (शांति की) नजर इन सभी को अनदेखा करके बस एक ही चीज को निहारती रहती थी- दीवार पर बेटे की पुरानी तस्वीर और सामने ही मेज पर रखे दो पत्र, जिसे उसने सैकड़ों बार पढ़ लिया होगा, बस एक ही वाक्य पढ़ने के लिए- "मां मैं जल्दी ही वापस आऊंगा।"

बेटा अर्जुन बचपन से ही सपना देखा करता था कि बड़ा होकर देश की रक्षा करेगा। वह जल्द ही बड़ा होकर एक सैनिक बनना चाहता था। बचपन में जब सारे बच्चे मिलकर नाटक की प्रस्तुति करते थे तब सबसे पहले सैनिक बनने के लिए अर्जुन ही हाथ उठाता था। धीरे-धीरे अर्जुन बड़ा होने लगा था, पढ़ाई और खेलकूद दोनों में ही वह बहुत कुशल था। मगर किस्मत के खेल ने उसे बहुत बड़ा धोखा दिया। सातवीं कक्षा में उसके पिताजी का निधन हो गया। कुछ ही दिनों में वह बहुत जिम्मेदार बन गया। वह घर का एक ही सहारा था, मगर अभी तक उसके अंदर सैनिक बनने की आग जल रही थी।

कहीं ना कहीं मां को बेटे को सैनिक बनते देखा अच्छा नहीं लग रहा था। वह बहुत ही चिंतित थी। अपने पति को खोने के बाद वह अपने बेटे को नहीं गँवाना चाहती थी पर बेटे के जिद को वह जानती थी।

कुछ वर्षों बाद अर्जुन को सेना में चयनित होने का पत्र आया। इस पत्र को पाकर वह फूले न समाया। उसने आसपास के सभी घरों में शांति के हाथों से बने मिठाईयां भिजवाई और जाने की तैयारी शुरू की। गांव के बस अड्डे पर अर्जुन को छोड़ने अधिकतर गांववासी आए थे। मां ने अर्जुन के लिए अपनी एक नई साड़ी को फाड़कर रोटी बांध दी, साथ में डिब्बे में आचार भी दे दिया। "इस महीने थोड़ा ज्यादा खर्च हो गया था तो बस अचार ही दे

रही हूं, रास्ते में खा लेना। अगली बार जब आएगा तो तेरी पसंद की मिठाई बनाकर दूंगी," मां ने कहा।

"अगली बार थोड़ी ज्यादा मिठाईयां बनाना क्योंकि जीत की खबर लेकर लौटूंगा मां," अर्जुन ने मां को गले लगाकर कहा। मां अपने आंसू नहीं रोक पाई। वह फूट-फूटकर रोने लगी पर फिर भी अपने बेटे को एक अच्छी विदाई देने के लिए उसने अपने आंसू पोंछकर, मुस्कुराकर अर्जुन को विदा किया।

बेटे के जाने के बाद मां का दिल जोरों से धड़कता रहता था तथा घर बिल्कुल सूना-सूना लगता था। जब भी गांव में डाकिया आता, वह घर से नंगे पांव दौड़कर जाती यह देखने के लिए कि उसके बेटे ने चिट्ठी भेजी या नहीं। हर बार दौड़कर जाती और पैर घसीटते हुए निराश होकर घर को लौट जाती।

एक बार डाकिया खुशी से उसके घर तक चला आया और कहा, "मां जी, आपकी इंतजार की घड़ी खत्म हुई, आपके बेटे ने एक चिट्ठी भेजी है।" शांति सारा काम-धाम छोड़कर जल्दी से चली आई और डाकिया का शुक्रिया अदा किया। चिट्ठी खोलने पर पता चला कि भारत जंग जीतने वाला है और कुछ ही दिनों में उसका बेटा घर लौटेगा। यह जानकर शांति के मन को बहुत शांति मिली।

कुछ हफ्तों बाद खबर आई कि सीमा पर संघर्ष बढ़ गया है। मां का दिल घबराने लगा। गांव में अफवाहें फैलने लगी कि कई जवान घायल हो गए हैं। मां रेडियो और टीवी पर खबरें सुनती रही पर अर्जुन का नाम कहीं नहीं था। हर शाम मां घर के बाहर बेटे के मनपसंद मिठाई के डिब्बे के साथ चारपाई डालकर बैठती- मानो बेटा अचानक आ जाएगा।

पड़ोसी सांत्वना देते, लेकिन मां कहती, "वह आएगा...... बस।" बेटे का एक पुराना पत्र वह बार-बार पढ़ती और मन ही मन "लौटूंगा" शब्द को देखकर बहुत खुश हो जाती।

एक दिन अचानक दोपहर के समय सेना की जीप घर के बाहर आकर रुकी। मां जिस आरती की थाली और मिठाई के डिब्बे को हर वक्त लेकर बैठती थी, उसे लेकर शीघ्र द्वार पर पहुंची। दो सैनिक जीप से उतरे मगर अर्जुन नहीं। उनके हाथों में बेटे की वर्दी, एक मोड़ा हुआ तिरंगा और उसके कंधे का बैच भी था। उन्होंने कहा, "मैडम आपका बेटा आखिरी सांस तक लड़ता रहा.....।"

मां ने तिरंगे को गले से लगाया। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। उसका चेहरा सूखा पड़ गया और बस एक ही बात बोली, "मैंने तुझे कभी नहीं कहा मगर मैं चाहती थी कि तू पढ़-लिखकर कोई सुरक्षित काम करें मगर तूने सेना ज्वाइन करके मेरा नाम रोशन किया।जय हिंद!"

महीनों बाद भी मां शाम को चारपाई पर बैठती थी, दरवाजे की तरफ देखती। वह कहती थी कि, "मेरा बेटा छुट्टी पर आया तो मैं उसकी पसंद का हलवा बनाऊंगी।" गांव के लोग जानते हैं कि वह सच जानती है लेकिन दिल मानने को तैयार नहीं। आखिर एक मां तो मां होती है।

इंस्टालेशन

श्री सूरज कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

हमलोग सुख सुविधा आरामदायक जीवन जीने की ओर अग्रसर हो रहे हैं। जिसके कारण आजकल 'इंस्टालेशन' शब्द बहुत प्रचलित हो रहा है। जिंदगी को आरामदायक बनाने के लिए बहुत सारे इलेक्ट्रॉनिक गैजेट हमारे जीवन में अपनी जगह बना रहे हैं। इसी आरामदायक जीवन को जीने के लिए बहुत सारे इलेक्ट्रॉनिक गैजेट को हमलोग घर लाकर उसे लगाते हैं या फिटिंग करवाते हैं, इसी प्रक्रिया को इंस्टॉलेशन कहा जाता है। इन इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में टीवी, पानी का फिल्टर, एसी, डीटीएच/डिश केबल, इंटरनेट-वाईफाई इत्यादि आते हैं।

हमलोग इलेक्ट्रॉनिक गैजेट के आदी तो हो ही चुके हैं, साथ ही साथ इनको खरीदने के लिए हमें ऑनलाइन ई-कॉमर्स वेबसाइट की भी लत लग चुकी है। हमलोग कोई भी सामान खरीदने से पहले ज्यादा सोचते नहीं हैं। सामान खरीदने का ख्याल जब मन में आया तो उसे जल्दी से ऑनलाइन ई-कॉमर्स की वेबसाइट पर जाकर ढूंढते हैं और पसंद आने पर उसको ऑर्डर कर देते हैं। यहीं पर इन ई-कॉमर्स कंपनियों का खेल शुरू हो जाता है। यह ई-कॉमर्स की कंपनियां इंस्टॉलेशन के नाम पर लोगों को इंस्टॉलेशन पैकेज खरीदने पर बाध्य करती हैं। अगर आप ऑनलाइन ऑर्डर करते वक्त इंस्टॉलेशन पैकेज नहीं लेते हैं तो ई-कॉमर्स वेबसाइट के अनुसार आपको वारंटी का लाभ नहीं दिया जाएगा। ई-कॉमर्स वेबसाइट या एप्प ने लोगों के मन में डर का माहौल बना रखा है कि अगर आप कोई भी इलेक्ट्रॉनिक सामान हमारी वेबसाइट से खरीदते हैं तो आपको हमारे वेबसाइट से ही इंस्टॉलेशन का पैकेज लेना पड़ेगा। अभी इंस्टॉलेशन के पैकेज में बहुत सारी चीजें छुपी रहती हैं, जिसके बारे में ग्राहक को सामान खरीदते वक्त नहीं बताया जाता है। जब कोई नया ग्राहक सामान खरीदता है तो उसे यह लगता है कि जब वह इलेक्ट्रॉनिक गैजेट घर पर आएगा तो वह कंपनी के द्वारा इंस्टॉल कर दिया जाएगा और उसमें उनका कोई अतिरिक्त खर्च नहीं लगेगा। यही ग्राहक की सबसे बड़ी बेवकूफी है। एक बार सामान घर पर आ जाने के बाद आप चाहकर भी इंस्टॉलेशन से पीछा नहीं छुड़ा सकते हैं। घर पर कोई नया सामान जब आता है तो घर वाले भी आपके पीछे पड़ जाते हैं कि इसे जल्दी से लगवा दीजिए। मजबूरन घर में आए इलेक्ट्रॉनिक सामान को इंस्टॉल करवाना पड़ता है।

ऑनलाइन ऑर्डर करने के दौरान जब हम लोग इलेक्ट्रॉनिक सामान के साथ इंस्टॉलेशन भी आर्डर करते हैं तो मूल रूप से इलेक्ट्रॉनिक सामान घर पर पहुंचने से पहले ही इंस्टॉलेशन वाले के पास यह संदेश पहुंच चुका होता है कि कहां पर इंस्टॉलेशन करने जाना है। समान पहुंचने से पहले ही इंस्टॉलेशन वाले फोन कर देते हैं कि आपके यहां फलाना सामान आने वाला है तो हमलोग इंस्टॉलेशन के लिए आएंगे। सामान के डिलीवर होने के बाद इंस्टॉलेशन करने के लिए कर्मचारी आते हैं। सबसे पहले वे लोग इंस्टॉलेशन के लिए आपके मोबाइल पर आए ओटीपी (one time password) की मांग करते हैं। ओटीपी की प्रविष्टि इस

बात का सबूत होता है कि इंस्टॉलेशन वाले कर्मचारी आपके घर आए हैं। एक बार ओटीपी बता देने के बाद अब आप इंस्टालेशन से पीछा नहीं छुड़ा सकते हैं। ओटीपी सत्यापन के पश्चात वे डिलीवर हुए सामान का निरीक्षण करते हैं कि उसमें कोई पार्ट डैमेज तो नहीं हुआ है, कोई सामान छूट तो नहीं गया है। तत्पश्चात वे आपसे इसे लगाने के लिए जगह के बारे में चर्चा करते हैं। जगह निश्चित हो जाने के बाद वह उस जगह पर ड्रिल मशीन से ड्रिल करते हैं और उसके बाद यहां से उनका खेल शुरू होता है। अब वह बताएंगे कि पाइप का साइज छोटा है, तार छोटा है, कॉइल छोटा है, कनेक्टर नहीं है, इत्यादि। इन सब चीजों की पूर्ति करने के लिए आपको अतिरिक्त शुल्क देने होना। मरता क्या ना करता आपको मजबूरी में इन सब चीजों के लिए हामी भरनी पड़ती है। काम खत्म होने के पश्चात जब आपको इंस्टॉलेशन के नाम पर अतिरिक्त बिल पकड़ा दिया जाता है, तब आपका माथा ठनक जाता है। आप सोच रहे होते हैं कि हमने तो ऑनलाइन ऑर्डर किया था, उस समय इंस्टॉलेशन के लिए जो चार्ज बताया गया था, उससे तो यह ज्यादा बैठ रहा है तो उस समय आप ठगा हुआ महसूस करेंगे। आप सोचेंगे कि इससे तो अच्छा था कि ऑफलाइन नजदीक के लोकल बाजार से ही सामान खरीद लाते और वे लोग घर में आकर लगा भी देते और इससे कोई झंझट भी नहीं होता। कम दाम, आकर्षक ऑफर और सस्ते के चक्कर में ऑनलाइन खरीदे गए समान के साथ इंस्टॉलेशन पर होने वाले खर्चे को मिलाकर किसी इलेक्ट्रॉनिक सामान का दाम लगभग लोकल मार्केट जितना ही पड़ जाता है।

इस तरह की घटना मेरे तथा मेरे जानने वाले के साथ भी हुई है, उनमें से कुछ अंश मैं आपके साथ साझा करना चाहूंगा कि मैंने अपने घर के लिए वॉटर प्यूरीफायर/फिल्टर ऑनलाइन खरीदा। ऑनलाइन खरीदते वक्त इंस्टॉलेशन मुफ्त में दिखाया गया था। इंस्टॉलेशन के लिए कोई खर्च न लगने के कारण मैं मन ही मन निश्चित था कि इंस्टॉलेशन में कोई खर्च नहीं आएगा सिर्फ फिल्टर खरीदने में जो पैसा लगेगा एक ही बार लगेगा पर यह मेरा भ्रम था। वाटर फिल्टर जब घर पर डिलीवर हुआ, तब डिलीवरी के बाद इंस्टॉलेशन वाले का फोन आया कि मैं कल आपके यहां फिल्टर इंस्टॉलेशन करने के लिए आऊंगा। हमसे ज्यादा हमारे परिवार के सदस्य खुश थे कि कल हमारे घर में नया सामान लगने वाला है। अगले दिन वॉटर प्यूरीफायर इंस्टॉल करने के लिए कर्मचारी आए। उन्होंने सबसे पहले ओटीपी मांगा। ओटीपी अपने एप्लीकेशन में प्रविष्ट करने के बाद उन्होंने काम शुरू किया। सबसे पहले उसने कार्टून के पैकेट को खोला जिसमें वाटर फिल्टर डिलीवर हुआ था और उसके अंदर फिल्टर को चेक किया और उसके सभी सामान को देखा। फिर वह फिल्टर को लगाने के लिए किचन की तरफ चला गया और जगह के बारे में पूछा। हमने फिल्टर इंस्टॉल करने के लिए जगह बता दिया। उसके बाद उन्होंने ड्रिल मशीन से दीवार में छेद किया। उस छेद में उन्होंने स्क्रू /कील ठोक दिया और फिल्टर को उसपर लटका दिया। फिर उन्होंने पूछा कि फिल्टर में पानी का कनेक्शन कहां से जाएगा फिर हमने किचन में लगे पाइप को दिखाया। फिर उसने पानी के पाइप को देखकर कहा कि यह नल/पाइप दीवार में ज्यादा

सटा हुआ है इसमें फिल्टर का कनेक्शन फिट नहीं होगा। आपको प्लंबर को बुलाकर इसे बाहर निकलवाना पड़ेगा तभी फिल्टर का कनेक्शन हो पाएगा। इसपर मैंने पूछा कि क्या यह आप नहीं करेंगे? तो फिल्टर इंस्टॉल करने वाले ने बताया कि उनका काम बस दीवार में ड्रिल करके स्क्रू लगाकर फिल्टर को फिट करना है और उसके पाइप को पानी के पाइप में जोड़ना है। आपको पहले प्लंबर बुलाकर पानी के पाइप में उसके नोजल को फिट करना पड़ेगा उसके बाद हम लोग सिर्फ उसमें फिल्टर के पाइप को जोड़ देंगे। कंपनी के तरफ से इंस्टॉलेशन पर सिर्फ इतना ही काम किया जाता है। अगर आपको पाइप बाहर निकाल कर नोजल फिट करवाना है तो आपको इसके लिए एक्स्ट्रा पैसे देने होंगे। इतना सुनकर मुझे कुछ धक्का सा लगा, मैं अपने आपको ठगा सा महसूस करने लगा।

फिल्टर को ऑनलाइन ऑर्डर करते वक्त मैंने मन ही मन सोचा था कि जब यह इंस्टॉल करने के लिए आएगा तो बिना पैसे के मुफ्त में इंस्टॉल हो जाएगा। पर यहां तो हर चीज के अतिरिक्त पैसे मांगे जा रहे हैं। फिलहाल फिल्टर को क्वार्टर में इंस्टॉल करना था और क्वार्टर के पाइपलाइन क्वार्टर के कर्मचारी देखते हैं। अतः मैंने वाटर फिल्टर वाले से कहा, “ठीक है पहले मैं पाइप को बाहर निकलवाता हूँ, फिर मैं आपको बुलाऊँगा।” तो उन्होंने कहा, “ठीक है तो आप ऑनलाइन ही फिर से इंस्टॉलेशन बुक कर सकते हैं, पर इस बात की गारंटी नहीं है कि मुझे ही आपका काम अलॉट किया जाएगा। ऑनलाइन बुकिंग करने के बाद कोई दूसरा व्यक्ति भी आपके यहां काम करने के लिए आ सकता है।” इस पर मैंने हामी भारी, फिर उन्हें जाने को कहा।

अब अगले दिन मैंने क्वार्टर के कर्मचारियों को पाइप बाहर निकालने के लिए अनुरोध किया। क्वार्टर के कर्मचारियों ने भी पाइप लगाने में 2 दिन विलंब किया। पाइप बाहर लगाकर नोजल फिट करने के बाद मैंने फिर फिल्टर इंस्टॉलेशन के लिए ऑनलाइन बुकिंग किया। बुकिंग के वक्त मुझे समय का स्लॉट चुनने के लिए कहा गया। मैंने तिथि तथा समय का स्लॉट चुनकर इंस्टॉलेशन बुक कर दिया। मैं निश्चिंत था कि अगले दिन तय समय पर इंस्टॉलेशन करने वाले कर्मचारी आएंगे और फिल्टर को इंस्टॉल कर देंगे। पर ये क्या.. रात में मैसेज आता है कि “आपकी इंस्टॉलेशन की बुकिंग रद्द कर दी गई है। आप अगली किसी तारीख या स्लॉट में बुकिंग कर सकते हैं।” मैंने पुनः दूसरी डेट को बुकिंग की। इस बार भी बुकिंग के दिन सुबह-सुबह मैसेज आता है कि, “आपकी बुकिंग रद्द कर दी गई है। आपके पैसे आपके अकाउंट में वापस कर दिए गए हैं।” मैंने फिर से दोबारा कोशिश की। फिर से अगले दिन का इंस्टॉलेशन बुक किया, फिर से वह बुकिंग भी कैंसिल हो गया। तब मुझे इस संबंध में कंपनी के कस्टमर केयर के पास शिकायत दर्ज करानी पड़ी कि मैं बार-बार इंस्टॉलेशन की बुकिंग कर रहा हूं और बुकिंग कैंसिल हो जा रही है। फिर उन्होंने आश्वासन दिया कि कल आपके यहां इंस्टॉलेशन के लिए कर्मचारी आएंगे और कल आपके यहां फिल्टर इंस्टॉल हो जाएगा।

अगले दिन हमारे यहां इंस्टॉलेशन करने के लिए दूसरे कर्मचारी आए और वे फिल्टर के पाइप को पानी के पाइप से जोड़ने लगे। उन्होंने पाया कि पाइप आधे मीटर छोटी है। तो उन्होंने बोला कि एक्स्ट्रा पाइप के लिए आपको अलग से पैसे का भुगतान करना होगा। मैं मन ही मन मुस्कुरा रहा था। फिर मैंने मुस्कुराते हुए पूछा कितने पैसे लगेंगे? तो उन्होंने बताया कि ₹200 । यह बात सुनकर मैं चिढ़ गया। मैंने उससे कहा “इंस्टॉलेशन के नाम पर सिर्फ दीवार पर कील लगाकर फिल्टर को लटकाना ही आपका काम है। अगर पाइप थोड़ी सी छोटी है तो वह आप अपने से नहीं दे सकते हैं। इसके लिए ग्राहक को अलग से पैसे देने होंगे और अगर ग्राहक पैसे देने को राजी भी हो जाए तो आप इतने पैसे बता रहे हैं कि यह समझ से बाहर है। एक

हाथ के पतले से प्लास्टिक के पाइप का 200 रुपए दाम हैं...!" इसपर फिल्टर इंस्टॉल करने वाले कर्मचारी ने कहा, "यह कंपनी का रेट है। इसमें हमलोग कुछ नहीं कर सकते हैं। आप कंपनी के वेबसाइट या एप्लीकेशन पर इन एस्सेसरीज़ का दाम देख सकते हैं।" यह जानकार मैंने उन्हें काम बंदकर कल आने को बोल दिया।

यह सुनकर मेरी पत्नी मुझे मनाने की कोशिश करने लगी। उन्होंने कहा कि कितनी मुश्किल से तो ये कर्मचारी आए हैं। इससे पहले तो कई बार हमारी इंस्टॉलेशन बुकिंग कैंसिल हो चुकी है। ये जितने पैसे मांग रहे हैं, उतने पैसे देकर अपना काम करवा लीजिए नहीं तो फिर इन्हें दोबारा आने में देरी होगी। पर मैंने बोला कि यह पैसों की बात नहीं है। यह एक स्कैम है, जो इंस्टॉलेशन के नाम पर लोगों को ठगा जा रहा है। इंस्टॉलेशन के लिए जो कर्मचारी आते हैं उनका मुख्य मकसद ग्राहक की जेब से पैसे निकलवाना होता है। इंस्टॉलेशन के समय कुछ ना कुछ त्रुटि बता कर उनसे अतिरिक्त पैसे की मांग की जाती है जिससे उनकी भी कमाई होती है। हम दोनों के बीच विवाद को बढ़ता देखकर मेरे परिवार वालों ने मुझे दूसरे कमरे में बैठा दिया। फिर मैं चुपचाप दूसरे कमरे में जाकर बैठ गया। मैंने तो इंस्टॉलेशन करने के लिए मना कर दिया था पर परिवार वालों ने उस कर्मचारियों को बोला कि वे अपनी तरफ से उनको ₹200 दे देंगे, आप फिल्टर लगाकर चालू कर दीजिए। फिर फिल्टर लगाने वाले कर्मचारियों ने पाइप और कनेक्टर लगाकर फिल्टर चालू कर दिया और हमारे परिवार वालों से ₹200 अतिरिक्त लेकर चले गए।

फिर कुछ महीने के बाद हमलोग वह जगह छोड़कर दूसरे मकान में रहने के लिए गए। वहाँ फिर से फिल्टर इंस्टॉल करने की झंझट आ पड़ी। फिर से नई जगह पर फिल्टर इंस्टॉल करने के लिए मैंने कस्टमर केयर को फोन किया। इस बार कस्टमर केयर वाले बोलते हैं कि अगर नई जगह पर फिल्टर इंस्टॉल करने के लिए हमारे कंपनी के कर्मचारी जाएंगे तो इसके लिए इंस्टॉलेशन का आपको शुल्क देना होगा। इसपर तो मैंने अपना सिर ही पीट लिया। मैंने कस्टमर केयर से पूछा कि कितना शुल्क देना पड़ेगा तो उन्होंने बताया कि आपको नई जगह पर इंस्टॉलेशन के लिए ₹500 देने होंगे। यह ₹500 का चार्ज या तो आप ऑनलाइन भी दे सकते हैं या ऑफलाइन, जो कर्मचारी आपके यहां इंस्टॉलेशन करने के लिए आएंगे उनको भी दे सकते हैं। यह आप पर निर्भर करता है। मैंने फिर इंस्टॉलेशन के लिए बुकिंग कर दी पर बुकिंग कैंसिल कर दी गई। पुनः मैंने बुकिंग किया। बुकिंग करने के दो दिन बाद कंपनी के कर्मचारी आए और औपचारिकताएं पूरी करने के बाद अपना काम शुरू कर दिया। इस बार तो पाइप पूरे थे परंतु पाइप को कनेक्ट करने के लिए एक कनेक्टर गायब था। घर का सामान एक जगह से दूसरी जगह शिफ्ट करने पर फिल्टर का एक छोटा सा कनेक्टर खो गया था। इसपर फिल्टर इंस्टॉल करने वाले कर्मचारियों ने बोला कि इस कनेक्टर के लिए आपको ₹100 अतिरिक्त भुगतान करने होंगे यानी ₹500 के अलावा ₹100 कुल मिलाकर ₹600 का भुगतान करना होगा। मैंने उसे कर्मचारी से कहा कि, "एक छोटी उंगली के बराबर कनेक्टर के लिए ₹100 रुपया ज्यादा नहीं लग रहा है....? बाहर बाजार में यह प्लास्टिक का छोटा सा सामान 5 या ₹10 रुपये में मिल जाएगा।" इसपर उन्होंने अपना वही पुराना राग अलापना शुरु किया कि यह कंपनी का रेट है। आप कंपनी की वेबसाइट पर रेट चार्ट देख सकते हैं। कंपनी के तरफ से यही रेट तय किए गए हैं, आपको इतना ही भुगतान करना होगा। मैंने बोला, "क्या मैं बाहर से ला दूं?" इसपर उन्होंने कहा ," बाहर से लाने पर आपकी वारंटी खत्म हो जाएगी। आप बाहर का सामान इसके साथ प्रयोग नहीं कर सकते हैं।" अंततः मजबूरन मैं उसे 100 रुपये देने को राजी हुआ और फिल्टर इंस्टॉल करवाकर उस कर्मचारियों को विदा किया।

इस घटना से मैं बहुत आहत हुआ। मैं मन ही मन सोच रहा था कि क्या सिर्फ दीवार पर कील/स्क्रू लगाकर फिल्टर को लटकाने के लिए ₹500 रुपये का शुल्क वाजिब है?

वक्त है देश के लिए कुछ करने का

श्रीमती सुषमा चौबे
पत्नी- श्री नवीन कुमार चौबे, स.लेप.अ.

करोड़ों ने दी जान
लाखों हुए कुर्बान
हजारों हुए बर्बाद
करने को यह देश आजाद।

भगत सिंह ने हथियार उठाकर
हक के लिए लड़ना सिखाया
गांधी जी ने आंदोलन चला
अमन शांति का पाठ पढ़ाया।

नेहरू भी शामिल थे जंग में
तिलक ने भी साथ निभाया
इन वीरों की पहल ही थी
जो देश आजाद हो पाया।

इन सभी ने देखा एक ही सपना
हो आजाद यह देश अपना
आज आजाद तो है ये वतन अपना
पर क्या यही था वह सपना!

भ्रष्टाचार कर रहा देश को खोखला
गरीबी की राह भी कोई नहीं रोक रहा
डरती है औरतें करने को दहलीज पार
नन्हें हाथ तरसते हैं सीखने को अक्षर चार।

धर्म की बुनियाद पर इंसान यहां बंटा पड़ा
कोई तो मदद करे
ये देश भी यही कह रहा
शायद गूंज है ये जरूरत की
शायद हसरत है मदद की

क्यों डरना आगे बढ़ने से
आखिर बात है अपने वतन की
एक कदम तुम बढ़ाओ
दूसरा कदम अपने आप बढ़ेगा

तुम आगे राह बनाओ
पीछे-पीछे पूरा देश चलेगा
पैंसठ साल पहले जो देश एक हुआ था
आज फिर उसे एक करना है
वो जंग थी दुश्मनों से
आज खुद से लड़ना है।

अधूरी तस्वीर

सुश्री स्वागतिका साहू
सुपुत्री- श्री गणेश्वर साहू, लेखापरीक्षक

बर्फ से ढकी पहाड़ियों के बीच बसा एक छोटा सा गांव था कसौली। वहां की गलियां संकरी थीं लेकिन दिल बड़े थे। हर सुबह सूरज की पहली किरण जैसे पूरे गांव को सुनहरे रंग से रंग देती थी। उसी गांव में एक लड़की रहती थी राधिका। उसकी आंखों में सपने थे और मन में चित्रकार बनने की इच्छा।

राधिका अपने पिता के साथ रहती थी। उसकी मां का देहांत बहुत पहले ही हो चुका था। पिता गांव के सरकारी स्कूल में अध्यापक थे। राधिका दिन भर चित्र बनाती रहती थी। कभी पहाड़, कभी बर्फ तो कभी अपने सपनों की दुनिया। उसके पास रंग कम थे लेकिन कल्पना की उड़ान असीम थी। उसका सपना था कि वह एक दिन अपनी चित्रकला से दुनिया को दिखाएंगे कि छोटे गांव में भी बड़ी प्रतिभाएं छिपी होती हैं।

एक दिन शहर में आयोजित होने जा रहे एक कला प्रदर्शनी के बारे में घोषणा हुई। राधिका के मन में उत्साह की लहर दौड़ गई। उसने तय किया कि वह अपनी सबसे सुंदर तस्वीर उस प्रदर्शनी में भेजेगी। उसने कई रातें जागकर एक ऐसी तस्वीर बनाई जिसमें उसने पूरे जीवन का सार उतार दिया। वह तस्वीर एक लड़की की थी, जो पहाड़ियों की ओर देख रही थी। उसके चेहरे पर संकल्प, आंखों में चमक, हवा में उड़ते बालों में स्वतंत्रता की महक थी लेकिन उस चित्र की एक खास बात थी। उस लड़की का चेहरा अधूरा था, राधिका ने जानबूझकर चेहरा अधूरा छोड़ा था। जब उसके पिता ने पूछा “बेटी चेहरा क्यों नहीं बनाया?” तो राधिका मुस्कुरा कर बोली, “यह चेहरा हर उस लड़की का है जो अपने सपनों को पूरा करना चाहती है, जिसे देख कर वह खुद को इसमें देख पाए।“

प्रदर्शनी का दिन आया। राधिका अपने चित्र को लेकर कसौली से शिमला रवाना हुई, जहां प्रदर्शनी का आयोजन था। पहली बार वह अपने गांव से बाहर जा रही थी। उसका दिल धड़क रहा था लेकिन मन में विश्वास था। जब वह वहां पहुंची तो बड़े-बड़े शहरों से आए कलाकारों की पेंटिंग्स देखकर वह कुछ पल के लिए घबरा गई। उसकी पेंटिंग बहुत साधारण लगने लगी। ना तो फ्रेम की चमक और ना ही आधुनिक शैली लेकिन फिर उसे अपनी मां की कही बात याद आई- "कला का मतलब दिल को छूना होता है दिखावा नहीं।" उसने हिम्मत जुटाई और अपनी तस्वीर को प्रदर्शनी में रखवा दिया।

प्रदर्शनी में बहुत से लोग आए। बड़ी-बड़ी हस्तियां, पत्रकार और कला समीक्षक लेकिन कोई भी राधिका की पेंटिंग की ओर नहीं देख रहा था। उसके चेहरे पर मायूसी छा गई, आंखों में आंसू थे। तभी एक वृद्ध व्यक्ति वहां आए जो एक प्रसिद्ध चित्रकार थे-रघुवीर शर्मा। उन्होंने राधिका की पेंटिंग देखी और कुछ देर तक चुपचाप देखते रहे। फिर उन्होंने आयोजकों से कहा, "इस पेंटिंग को मुख्य दीवार पर लगाया जाए। यह सिर्फ चित्र नहीं एक क्रांति है।"

अचानक सबकी निगाहें उस अधूरी तस्वीर पर गई। लोग पास जाकर देखने लगे, समझने लगे। किसी को वह चेहरा अपनी बेटी जैसा लगने लगा, किसी को खुद जैसा। लोगों की प्रतिक्रिया देखकर राधिका का चेहरा खिल उठा। शाम तक वही चित्र चर्चा का विषय बन चुका था।

अगले दिन अखबारों में उस तस्वीर की फोटो छपी थी- "एक अधूरी तस्वीर, जो सबका चेहरा बन गई।" राधिका को बधाइयां मिलने लगी। उसे एक कला विद्यालय में छात्रवृत्ति भी मिल गई। वह कसौली लौट आई लेकिन अब वह सिर्फ राधिका नहीं एक प्रेरणा बन चुकी थी।

उसकी सफलता ने गांव के और बच्चों को भी प्रेरित किया। कसौली का नाम अब सिर्फ बर्फ के लिए नहीं बल्कि कला के लिए भी जाने जाने लगा। राधिका ने अपना एक चित्रकला विद्यालय खोला जहां वह बच्चों को नि:शुल्क चित्रकारी सिखाने लगी। वह चाहती थी कि कोई भी सपना सिर्फ इसलिए अधूरा ना रह जाए क्योंकि वह किसी छोटे से गांव में जन्मा है।

समय बीतता गया। राधिका ने कई पुरस्कार जीते। कई शहरों में प्रदर्शनी लगाई लेकिन वह अधूरी तस्वीर उसकी पहचान बन चुकी थी। लोग आज भी उसे देखकर कहते, "यह वही पेंटिंग है जिसने राधिका को राधिका बनाया।"

एक दिन एक पत्रकार ने उससे पूछा, "आपने अब तक इतनी तस्वीर बनाई है लेकिन आपने उसे अधूरी तस्वीर को कभी पूरा क्यों नहीं किया?" राधिका मुस्कुराई और बोली क्योंकि वह अधूरी तस्वीर ही पूरी है उसमें हर किसी का सपना है। अगर मैं पूरा कर दूंगी तो वह सिर्फ मेरी रह जाएगी।

आज भी कसौली के पहाड़ों के बीच राधिका का विद्यालय खड़ा है। वहां बच्चों की हंसी गूंजती है, रंगों की खुशबू बसी रहती है और हर दीवार पर सपनों की उड़ान नजर आती है। राधिका की कहानी बताती है कि कला सिर्फ रंग नहीं होती वह आत्मा की आवाज होती है। और जब आत्मा बोलती है तो पूरा संसार सुनता है।

कभी-कभी सबसे अधूरी चीज ही सबसे ज्यादा पूरी होती हैं, राधिका की अधूरी तस्वीर इसका प्रमाण है।

शादी

श्रीमती रोमा कुमारी
पत्नी- श्री सूरज कुमार, कनिष्ठ अनुवादक

राग‍िनी और उसकी मां ट्रेन से यात्रा कर रही थीं। यात्रा के दौरान मां अपनी बेटी राग‍िनी को शादी के लिए मनाने की कोशिश कर रही थी। मां कह रही थी कि बेटी जल्दी शादी कर लो, मेरी भी उम्र हो चली है। अभी तुम्हारे पापा ने एक लड़का देखा है जो प्रोफेशन से इंजीनियर है, तुम्हारी उसके साथ खूब जमेगी। इसपर राग‍िनी ने झुंझलाते हुए कहा, "माँ मैं इंजीनियर से शादी नही करूँगी....मैं खुद इंजीनियर हूँ.... मैं अपने प्रोफेशन वाले से शादी नहीं कर सकती।" इसके अलावा तो पापा डॉक्टर लड़का भी देख रहे हैं, माँ ने कहा। इसपर राग‍िनी ने उत्तर दिया कि डॉक्टर भी बहुत व्यस्त रहता है, उसको अपने लिए बहुत कम समय बचता है, मैं खुद से लड़का ढूंढ लूंगी, आपलोग परेशान मत होइए।

माँ ने उत्सुकता से पूछा, “कैसे खोजोगी लड़का?” राग‍िनी ने उत्तर दिया , “ढूंढ लेंगे अपने ग्रुप में, अपने आस-पास, इंटरनेट पर, बहुत जगह है ढूंढने को।” माँ ने बोला, “अगर ऐसा है तो अभी तक खोजा क्यों नहीं, घरवालों को क्यों परेशान कर रही हो?”

“माँ, मैं परेशान नहीं कर रही हूँ, मैं दबाव में शादी नहीं करना चाहती। मैं हड़बड़ी में शादी नहीं कर सकती। मैं आराम से लड़का ढूंढूंगी, शादी तो जीवन भर का साथ है, ऐसे ही किसी के दवाब में आकर शादी नहीं कर सकती,” राग‍िनी ने अपनी मां से कहा।

माँ- तुम्हें और कितना समय चाहिए, कुछ नियत समय बता दो। तुम्हारे बाद छोटी बहन की भी शादी करनी है।

राग‍िनी- छोटी बहन के चक्कर में क्या मैं अपनी जिंदगी बर्बाद कर लूं।

माँ- नहीं, वो बात नहीं है।

राग‍िनी- मेरी भी अपनी पसंद है, मेरी कुछ प्राथमिकताएँ हैं, जैसे- लड़का अच्छा दिखता हो, लड़का अपने आसपास का हो।

माँ- तुमको वैसा लड़का मिलेगा तब न। लड़के वाले शक्ल सूरत भी देखते हैं। तुम उतनी सुंदर भी नहीं हो।

राग‍िनी- मिल जाएगा न। सब लड़के एक जैसे नहीं होते। कुछ को विचार और गुण भी पसंद होते हैं।

माँ- शादी सिर्फ लड़के के पसंद से नहीं होती है। लड़के के परिवारवालों को भी लड़की पसंद होना चाहिए।

राग‍िनी- मैं आपको और पापा को देख रहीं हूँ। आप और पापा शादी के बाद कहाँ खुश हैं। मैं तो आपको और पापा को हमेशा लड़ते हुए देखती हूँ। हमेशा घर में किच-किच होते रहता है। आप जितना सह

लेती हैं, उतनी मुझमें सहनशक्ति नहीं है। सब कुछ परेशानी होते हुए आप मुँह से एक शब्द चूं तक नहीं करती। अभी बड़े पापा की बेटी को देखिए, कितना कष्ट झेल रही है। आपलोगों ने तो देखकर शादी किया था फिर क्या हुआ? उसका पति उसको कितना प्रताड़ित करता है, उसका पति उसको मारता भी है।

मां- सब लोग एक जैसे थोड़े ही होते हैं। पापा की पसंद सरकारी नौकरी वाला है।

रागिनी- सरकारी नौकरी वाला हमेशा सही नहीं होता है। सरकारी नौकरी से क्या फायदा।

माँ - सरकारी नौकरी वाले का हमेशा निश्चित वेतन होता है। कभी भूखे नहीं मरोगी। सालभर आराम से खाओगी। कोरोना के समय देखा था, सबका इनकम बंद था पर सरकारी नौकरी वालों का वेतन चालू था। सरकारी नौकरी वालों का घर चल रहा था। अच्छा तो ठीक है, तो बिजनेस वाले लड़के से शादी कर लो।

रागिनी- नहीं माँ, बिजनेसमैन से भी शादी नहीं करूँगी। बिजनेसमैन बहुत कंजूस होते हैं।

माँ- जैसे-जैसे समय बीतेगा वैसे-वैसे लड़कों की संख्या कम होती जाएगी। वर्तमान में जो ऑप्शन तुम्हें अभी मिल रहा है, तीन-चार साल में वो भी नहीं मिलेगा। तुम्हारे पास कोई चॉइस नहीं बचेगा। अंत में ऐसा होगा कि कोई लड़का नहीं मिलेगा। जो लड़का मिलेगा वो ज्यादा उम्र का होगा या तलाकशुदा होगा। उस समय उससे शादी करने के सिवा तुम्हारे पास कोई चारा नहीं रहेगा।

रागिनी- जब वैसा वक्त आएगा तो देखा जाएगा। अभी लास्ट टाइम जो सरकारी लड़का देखने गए तो उसने पूछा था कि घर के काम कर लोगी? उसको मैंने कहा था कि काम बांट कर करना होगा। मैं खाना बना दूंगी पर बर्तन आप धो देना। इस बात पर लड़के ने मनाकर दिया। आज कल के लड़के ये उम्मीद करते हैं कि उनकी बीबी ऑफिस से आए और उनके लिए खाना भी बनाए। तो माँ, मुझसे ये नहीं होगा। मैं वैसे लड़के से शादी करूँगी जो मेरे काम में हाथ बँटाए, मेरे साथ मिलकर काम करें।

माँ- सौ में पाँच लड़के ही ऐसे मिलेंगे, जो घरेलू काम में पत्नी की मदद करेंगे।

रागिनी- पड़ोस वाली काजल को देखा है, कैसे हमेशा दुखी रहती है। आपलोगों के चक्कर में शादी कर लूँ और अपनी जान से हाथ धो बैठूँ। ज्यादा दबाब में शादी करने के बाद मैं जिंदा नहीं रह पाऊँगी।

मां- ठीक है तो तुम्हारी शादी का तुम ही बताओ क्या करना है?

रागिनी- मुझे फिलहाल अभी कुछ समझ में नहीं आ रहा है। आप ऐसा कीजिए, छोटी बहन का रिश्ता देखना शुरू कीजिए।

मां- यह कैसी बातें कर रही हो? तुमसे पहले तुम्हारी छोटी बहन की शादी कैसे हो सकती है? लोग क्या कहेंगे? समाज क्या कहेगा?

रागिनी- तो मैं क्या करूं?

मां- देखो बेटा, बेटी की शादी करवाना माता-पिता का कर्तव्य होता है। पहले तो तुमने कहा कि मास्टर डिग्री करुंगी। फिर तुमने बोला कि मास्टर डिग्री करने के बाद जॉब करुंगी, उसके बाद शादी करूंगी। हमलोग वह भी मान गए। अब क्या दिक्कत है। हमलोग तुम्हारे साथ हैं। हमलोग तुम्हारा बुरा थोड़े ही चाहेंगे। हमलोग अच्छे से अच्छे लड़के और बेहतर घर की तलाश करेंगे उसके बाद ही हम तुम्हारी शादी करेंगे। शादी दो परिवारों का मिलन होता है। दो परिवार के बड़े लोग अपने बेटे-बेटियों ओर से शादी की बात करते हैं। अगर हमलोग तुम्हारी शादी करवाते हैं तो भविष्य में कोई भी दिक्कत आती है तो हमलोग उसको सुलझाने के लिए तैयार रहेंगे। अगर तुम खुद शादी करोगी तो बाद में जो कुछ होगा वह तुम खुद ही झेलना और

खुद से ही उसका समाधान करना।

रागिनी- मां मुझे थोड़ा और वक्त दीजिए। मैं कुछ और लड़कों की प्रोफाइल देखना चाहूंगी।

मां- देखो बेटी, लड़की के लिए ज्यादा ऑप्शन नहीं होता है। जीवनसाथी को चुनने का ऑप्शन लड़के वालों को दिया जाता है। लड़के वाले अगर हां करते हैं, तभी लड़की की शादी होती है। अगर लड़के वाले मना कर देते हैं तो लड़की की शादी नहीं होती है। तो सिर्फ तुम्हारे मान लेने या पसंद होने से इसकी कोई गारंटी नहीं है कि लड़के वाले भी मान जाएँ।

रागिनी- मुझे तो सिर्फ आपने दो-तीन प्रोफाइल ही दिखाया और उसी में से आप कह रही हैं कि अपने लिए जीवनसाथी चुन लो। ऐसा कैसे हो सकता है?

मां- इंजीनियर से तुम शादी करना नहीं चाहती, डॉक्टर के पास समय कम है, सरकारी जॉब वाले तुम्हें पसंद नहीं है, तो अब तुम्हारे लिए किस तरह का लड़का ढूंढ करके लाएं।

रागिनी- मैं प्राइवेट कंपनी वाले लड़के से शादी करूंगी।

मां- क्यों जानबूझकर कुएं में कूद रही है। प्राइवेट जॉब वाले को कब कंपनी से निकाल दें इसकी कोई गारंटी नहीं रहती है।

रागिनी- प्राइवेट वाला अब पहले जैसा नहीं रहा। प्राइवेट में भी बीमा मिलता है। लड़के के मरने के बाद लड़की को पैसा भी मिलता है और बिना परीक्षा दिए जॉब भी मिलता है। अभी जितना भी सरकारी विभाग में काम होता है, सब प्राइवेट कंपनी वाले ही करते हैं।

माँ- पर टेंडर तो सरकारी विभाग देता है न।

रागिनी- उससे क्या होता है, काम तो प्राइवेट वाला ही करता है न। प्राइवेट वाला खुले विचार का होता है।

मां- खुला विचार शादी के पहले या फिर शादी के कुछ सालों तक ही अच्छा लगता है। शादी के बाद हर लड़के के व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है। बाद में फिर तुम्हें वही बातें खटकेंगी।

रागिनी- ठीक है मां, पर मैं शादी करूंगी तो सिर्फ प्राइवेट जॉब वाले से।

मां- तुम प्राइवेट जॉब वाले के पीछे इतनी पागल क्यों हो?

रागिनी- प्राइवेट जॉब हर दिन कुछ ना कुछ नया करना चाहते हैं। वह एडवेंचरस लाइफ जीते हैं। उनमें कुछ अलग तरीके के काम को करने का एक्साइटमेंट रहता है।

मां- कुछ कंपनियों में प्राइवेट जॉब वाले सुबह से लेकर रात तक अपनी ड्यूटी करते रहते हैं। उसके बारे में तुम क्या कहोगी?

रागिनी- ऐसा कुछ कंपनियों में होता है पर मुझे ऐसा लगता है कि वह मेरे लिए समय निकाल लेगा।

मां- ठीक है अगर तुमने अपना मन बना लिया है तो प्राइवेट जॉब वाला लड़का तुम खुद खोजो क्योंकि तुम्हारे पापा तो प्राइवेट जॉब वाला लड़का नहीं खोजेंगे, उन्हें तो सरकारी जॉब वाला लड़का पसंद है।

रागिनी - ठीक है मां, मैं अपने लिए लड़का ढूंढ़कर आपको बताउंगी।

मां- ठीक है बेटी, पर जल्दी बताना। शादी के लिए बहुत कुछ तैयारी करनी पड़ती है।

चाँदनी गली की कहानियाँ

सुश्री सागरिका साहु
सुपुत्री- श्री गणेश्वर साहु, लेखापरीक्षक

शहर के पुराने हिस्से में एक छोटी सी गली थी जहां मकान इतने करीब थे कि हर घर की खिड़की से एक-दूसरे की घर की रसोई तक झाँका जा सकता था। इस गली का नाम था चांदनी गली। यहां रहने वाले लोग आपस में एक बड़े परिवार की तरह रहते थे। हर त्यौहार हर खुशी और हर दुख सब मिल-बाँटकर साझा करते थे।

चांदनी गली के अंतिम छोर पर एक बूढ़ा आदमी रहता था, जिनका नाम था इब्राहिम चाचा। सफेद दाढ़ी, कांपते हाथ और आंखों में एक अजीब सी चमक जैसे सालों के अनुभव का भंडार उसमें समाया हो। चाचा के घर के सामने एक नीम का पुराना पेड़ था जिसकी छांव में हर शाम मोहल्ले के बच्चे इकट्ठा होकर कहानी सुनते थे। इब्राहिम चाचा अपनी खनकती आवाज में किस्से सुनाते जिसमें कभी परियां होती थीं, कभी राजकुमार तो कभी गांव के साधारण लोग, जिनकी साधारण कहानी जादू से भरी होती थी।

एक दिन की बात है जब बारिश के बाद गली में मिट्टी की खुशबू फैली थी, हर कोना भींग चुका था। तभी इब्राहिम चाचा ने नई कहानी शुरू की। उन्होंने कहा, "यह कहानी एक ऐसे लड़के की है जो सपनों से डरता था।" बच्चे चौंक गए। सपनों से डरने वाला लड़का, कैसा होगा वो?

चाचा बोले, "उस लड़के का नाम था अर्जुन। वह एक छोटे से गांव में रहता था, जहां हर सुबह सूरज की पहली किरण खेतों में चमकती थी और शाम में मोर नाचते थे लेकिन अर्जुन को सपने डराते थे। जब भी वह सोता, भयानक सपनों में खो जाता और चीखकर उठ बैठता। उसके माता-पिता बहुत चिंतित रहते थे। वह उसे गांव के वैद्य के पास ले गए, मंदिर में पूजा करवाई, पीर बाबा के दरगाह पर मन्नतें मांगी लेकिन अर्जुन का डर कम नहीं हुआ।

चाचा ने गहरी सांस ली और कहानी को आगे बढ़ाते हुए कहा, फिर एक दिन गांव में एक बूढ़ा साधु आया। उसका चेहरा झुर्रियों से भरा था लेकिन आंखों में सुकून था। उसने अर्जुन को देखा और मुस्कुरा कर कहा, "डर से लड़ना सीखो बेटे। सपने तुम्हें डराने नहीं आए हैं. वह तुम्हें सिखाने आए हैं।" साधु ने अर्जुन को एक रहस्यमयी पुस्तक दी। उस पुस्तक में लिखा था कि जब भी डर लगे आंखें बंद करो और अपने डर का सामना करो। उसे चूम लो गले लगाओ तभी वह डर खत्म होगा।

अर्जुन ने साधु की बातों को दिल पर ले लिया। उस रात जब फिर वही बुरे सपने आए अर्जुन डरकर भागने के बजाय सपने में ही उस डरावने दृश्य के बीच खड़ा रहा। उसने अपने डर को देखा और कहा, "मैं तुमसे डरता नहीं हूं।" धीरे-धीरे दृश्य बदलने लगे। डरावनी आकृतियां सुंदर फूलों में बदल गईं। काली रातें सुनहरी सुबह में बदल गईं। अर्जुन पहली बार चैन की नींद सोया।

यह कहानी सुनकर बच्चे चुपचाप बैठे रहे। किसी को भी हिम्मत नहीं हो रही थी कुछ कहने की।

इब्राहिम चाचा ने मुस्कुराते हुए कहा, डर भागता नहीं वह दोस्त बनता है। बस तुम्हें अपनाना आना चाहिए।

इस तरह सालों बीत गए। चांदनी गली के बीच बच्चे बड़े हुए, कुछ पढ़ने बाहर चले गए कुछ ने यहीं अपने जीवन की राहें बना ली लेकिन इब्राहिम चाचा की कहानी सबके दिलों में बस गई थी।

फिर एक दिन खबर आई कि इब्राहिम चाचा अब नहीं रहे। पूरा मोहल्ला गमगीन हो गया। नीम का पेड़ भी जैसे सुना-सुना हो गया। बच्चों ने मिलकर तय किया कि चाचा की याद में हर साल एक कहानी महोत्सव आयोजित किया जाएगा। जिस दिन चाचा चले गए थे उसी दिन पूरा मोहल्ला नीम के नीचे इकट्ठा होता, दीप जलाए जाते और कहानी सुनाई जाती।

समय अपनी रफ्तार से चलता रहा। चांदनी गली की गलियां बदलने लगी। पुराने मकान गिरने लगे। नई इमारतें बन गईं। बच्चे बड़े होकर दुनिया के कोने-कोने में फैल गए लेकिन हर साल की तरह उस तारीख को चाहे कोई कहीं भी हो चांदनी गली में जरूर आता। पुराने घरों के बीच में एक नया पुस्तकालय भी बन गया था- चाचा इब्राहिम कहानी घर। इस पुस्तकालय में दुनिया भर की किताबें लाई गई थीं, लेकिन सबसे उंचे सेल्फ पर छोटी सी किताब रखी थी, जिसे साधु ने अर्जुन को दी थी- डर से दोस्ती करो।

एक बार की बात है, एक लड़की आई थी। उसका नाम था सान्वी। वह अपने दादा-दादी के साथ चांदनी गली में घूमने आई थी। बारिश हो रही थी। गलियों में वही पुराने मिट्टी की खुशबू फैली थी। नीम का पेड़ भी भींग रहा था। सान्वी पुस्तकालय में घुसी और सबसे ऊपर रखी किताब को देखने लगी।

पुस्तकालय की देखरेख करने वाले बूढ़े काका ने मुस्कुरा कर कहा, "यह किताब किसी जादूगर से कम नहीं है। इसमें डर भी हंसता है और सपने भी सच होते हैं।" सान्वी ने उत्सुकता से किताब उठाई और पढ़ने लगी। उसे भी रातों के डरावने सपने आते थे। उस किताब ने उसकी दुनिया बदल दी। अब जब भी उसे डर लगता है वह अपनी आंखें बंद करती और अपने डर को गले लगा लेती।

वर्षों बाद जब सान्वी बड़ी हुई तो वह एक प्रसिद्ध लेखिका बन गई। उसने पहली किताब लिखी- "चांदनी गली की कहानी" और उसमें उसने इब्राहिम चाचा को समर्पित एक पूरा अध्याय लिखा। उसकी किताब ने न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी धूम मचाई। लोग चांदनी गली को जानने लगे। नीम के पेड़ को देखने आने लगे और इब्राहिम चाचा की कहानियों को सुनने के लिए दूर-दूर से लोग आते।

चांदनी गली अब एक पर्यटन स्थल बन चुकी थी लेकिन गली की आत्मा वैसी की वैसी थी- सादगी, अपनापन और कहानियों का जादू। सान्वी हर साल उस आयोजन में आती, दीप जलाती और बच्चों को कहानी सुनाती। जब वह बच्चों से कहती डर से दोस्ती करो तो बच्चों की आंखों में वही चमक आ जाती जो कभी अर्जुन की आंखों में आई थी।

इब्राहिम चाचा भले ही दुनिया से चले गए थे लेकिन उन्होंने जो प्रेम, शिक्षा और सपनों का बीज बोया था वह चांदनी गली में हर कोने में खिल चुका था। हर नई सुबह के साथ जब सूरज नीम के पत्तों पर सुनहरी किरणें बिखेरता, ऐसा लगता जैसे चाचा मुस्कुरा रहे हो, अपनी पुरानी जगह पर बैठे हुए हों और कह रहे हो- हर कहानी की शुरुआत एक डर से होती है और हर कहानी का अंत प्यार से।

वक्त बदलता रहा पीढ़ियां बदलती रहीं लेकिन चांदनी गली की गलियों में अब भी हर शाम एक जादुई हवा बहती थी, जिसमें इब्राहिम चाचा की कहानियों की गंध होती थी। बच्चे अभी भी नीम के नीचे बैठते। कोई छोटा बच्चा उत्साह से पूछता, "आज कौन सी कहानी सुनाएंगे?" और कोई ना कोई मुस्कुरा कर एक नई कहानी बुनने लगता- एक कहानी जो डर से शुरू होती और सपनों में बदल जाती।

ए.आई.

श्रीमती दीप्तिमयी साहु
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

एक दिन सुबह अचानक वीडियो कॉल आता है, एक अनजान नंबर से एक पुराने दोस्त का जिसके साथ बहुत दिनों से आपका कोई संपर्क नहीं है। उनके चेहरे पर आतंक और भय की छाप है, किसी मुसीबत में फँस गये हैं, कुछ आर्थिक सहायता मांग रहे हैं। उनका स्वर, बोलने का तरीका यहाँ तक कि चेहरे की भावभंगिमा भी वैसी ही। आपके दिमाग में कोई भी संदेह आने से पहले ही आप सहायता करने के लिए तैयार हो जाते हैं। पर बाद में पता चला कि आप एक षड्यंत्र के शिकार हो गये हैं। आपके साथ बात करने वाला आपका कोई दोस्त नहीं बल्कि एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) से बनाया गया एक वीडियो था। इस तरह की कई घटनाएं घट रही हैं, जो आज की डिजिटल दुनिया की कड़वी सच्चाई है।

आज हम एक ऐसे समय में पहुंच गये हैं जहाँ मानव और यंत्र के बीच का अंतर दिन ब दिन धुंधला होता जा रही है। ए.आई. हमारी जिंदगी की एक अहम हिस्सा बनते जा रहा है। हर क्षेत्र में चाहे वो शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन या व्यापार क्यों ना हो, उसकी मौजूदगी हर जगह देखने को मिलती है।

AI एक तरह से जिन्दगी को सहज और सरल बनाता है तो दूसरी ओर सामाजिक एवं भावनात्मक संकट। हम सोचने को मजबूर हो जाते हैं कि क्या हम आदमी से बात कर रहे हैं?

आज की तारीख में चैटबोट/वर्चुअल सहायक (Virtual Assistant) आदमी के जीवन में एक अहम भूमिका निभा रहे हैं। हर समस्या का समाधान एक आदमी की तरह कर रहा है, जो एक ए.आई. प्रोग्राम है।

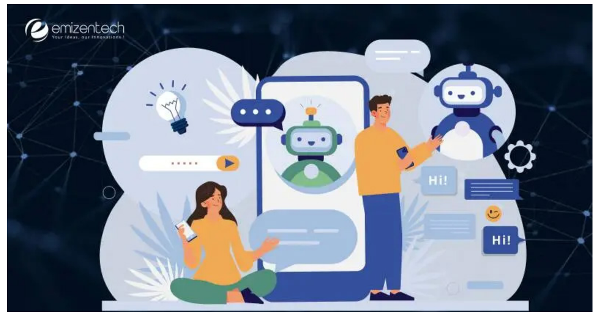

ए.आई. आपके सवाल को समझता है और सही जबाब दे सकता है । आपके साथ आदमी की तरह स्वाभाविक बात भी करता है। आज ए.आई. ने इतनी प्रगति कर ली है कि वो आदमी की भाषा, भाव और व्यवहार की नकल उतार लेता है। असली-नकली का भेद करना मुश्किल हो जाता है। लोग ऑनलाइन दोस्त बना रहे हैं। उनको पता भी नहीं होता कि वो दोस्ती किसी रक्त-मांसधारी मानव से कर रहे है या यंत्र से। मानव के पास संवेदन होती है, जो उसे यंत्र से अलग करता है लेकिन आज ए.आई. वो अंतर भी मिटा रहा है।

जापान में अकेलापन एक बड़ी समस्या है। ए.आई. साथी की वहाँ बड़ी चाहत है। ए.आई. साथी के साथ दिन-रात बात करते हैं, समस्या का समाधान पूछते है। वह बिना चिड़-चिड़ के सब सुनता है और जबाब भी देता है। वहीं दूसरी ओर इसका दुरुपयोग भी हो रहा है। डीपफेक टेकनोलॉजी का उपयोग करके सामाजिक समस्या पैदा की जा रही है। रचनात्मकता, कला, संगीत, चित्रकला सब खतरे में है। दो मिनट में ए.आई. सुन्दर संगीत की रचना कर देती है, आदमी का रचना क्या मूल्य रह जाएगा।

आदमी का संवेदनशीलता, उसका अनुभव, स्मृति, सामाजिक परिवेश से जन्म लेता है। हम जब किसी का दुःख देखते हैं तब सिर्फ दिमागी विश्लेषण नहीं करते बल्कि उसको हृदय से अनुभव भी करते हैं।

तो क्या ए.आई. की प्रगति पर रोक लगाई जाए? नहीं, ए.आई. हमारे लिए बहुत अवसर लाया है, जटिल से जटिल समस्या का हल निकल रहा है। बस जरुरत है एक संतुलन की। तकनीकी व्यवहार के समय अपना विवेक एवं नैतिकता को बनाए रखना होगा । सबसे महत्पूर्ण है कि हमें हमारी मानवीयता का फिर से अविष्कार करना होगा। इस तकनीकी दुनिया में सब कुछ स्वचालित एवं कृत्रिम होते जा रहा है, हम लोगों को असली मानवीय संबंधों के महत्व को समझना पड़ेगा। एक-दूसरे के साथ समय बिताना, आमने-सामने बात करना, एक-दूसरे का सुख दुःख अनुभव करना - इन्हीं सब गुणों से हम मानव कहलाते हैं। आज जब हम किसी से बात करते हैं या कोई हमें कोई सलाह दे रहा है तो एक सवाल गूंजता है, क्या ये मानव सुलभ सलाह है। ये आज के समय के एक गहरे दार्शनिक द्वंद्व का प्रतिफलन है। एक दिन ये सवाल हमें हमसे मिलाएगा, हमारी संवेदनशीलता और मानवीयता का सही अर्थ ढूँढने की प्रेरणा देगा। यंत्र कितना भी शक्तिशाली क्यों ना हो, वो मानव का विकल्प नहीं हो सकता, क्योंकि मानव केवल तथ्य और तर्क का समाहार नहीं बल्कि भावना, स्नेह, सहानुभूति एवं रचनात्मकता का जीवंत प्रतीक है।

आपके पत्र

TEL : 2535 5406, FAX : (044) 2533 0775
भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
दक्षिण रेलवे, पार्क टाउन, चेन्नै - 600 003.
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
SOUTHERN RAILWAY, PARK TOWN,
CHENNAI - 600 003.

सं:एसए/हिंदी पत्रिका/2025/1162 दिनांक: 24/07/2025

सेवा में,

सहायक निदेशक(राजभाषा)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, उत्तर खंड, रेल सदन
सामंत विहार , चंद्रशेखरपुर
भुवनेश्वर- 751017 (ओडिशा)

विषय – हिंदी गृह पत्रिका 'धर्मपद' के तेरहवें अंक के संबंध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'धर्मपद ' के तेरहवें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद । पत्रिका अति मनोरम व आकर्षक है । पत्रिका में श्री सूरज कुमार की रचना 'अंडमान यात्रा', श्री गोबिंद दीप की रचना 'आत्म प्रेम' तथा श्रीमती नीतु चंद्रा की रचना 'चलो चलें केरल' में जीवन का अत्यंत मार्मिक वर्णन है। सम्पूर्ण पत्रिका में सभी रचनायें अति रोचक, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं । संक्षेप में कहा जाए तो संपूर्ण पत्रिका उत्कृष्ट है।

पत्रिका के कुशल संपादन व प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के निरंतर उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय
जी. वी. सूर्य प्रभा 24/7/25
सहायक निदेशक (राजभाषा)

हि.प्र./ले.प./2022-23/पत्रिकापावती/90 I/987036/2025

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय, झारखण्ड, राँची
Office of the Principal Accountant General (Audit), Jharkhand, Ranchi

पत्रांक:-रा.भा.अनु./ले.प./पत्रिका-पावती/90/2025-26/54 दिनांक-28-05-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक
राजभाषा अनुभाग,
प्रधान निदेशक (लेखापरीक्षा) का कार्यालय,
पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर, ओड़िशा

विषय: हिंदी गृह-पत्रिका "धर्मपद" के 13वें अंक के पावती के प्रेषण के सम्बन्ध में।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका "धर्मपद" के 13वें का ई-संस्करण प्राप्त हुआ। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ एवं मुद्रण बहुत ही सुंदर है। इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है विशेषकर श्रीमती सागरिका साहू की "कश्मीर यात्रा", श्रीमती द्विती कृष्ण दाश की "त्योहार ओड़िशा के" इत्यादि।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सम्पादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
Digitally signed by
Manjesh Parashar
Date: 28-05-2025
16:49:01
सहायक निदेशक (रा.भा)

दूरभाष/Telephone: 0651-2411670/2413690 फैक्स/Fax: 0651-2412517/2413701 ई-मेल/e-mail: agaujharkhand@cag.gov.in

---

हिंदीकक्ष/पत्रिकाओकीपावती/2024-25/36(2) I/1004739/2025

ಮಹಾಲೇಖಪಾಲರು (ಲೆ. ಮತ್ತು ಹ.) ಕಛೇರಿ, ಕರ್ನಾಟಕ, ಬೆಂಗಳೂರು
ಭಾರತೀಯ ಲೆಕ್ಕಪರಿಶೋಧನೆ ಮತ್ತು ಲೆಕ್ಕಪತ್ರ ಇಲಾಖೆ
महालेखाकार (लेखा एवं हक) का कार्यालय, कर्नाटक,
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
Office of the Accountant General (A & E), Karnataka
Indian Audit & Accounts Department

सं. म.ले.(ले.व ह.)/हिं.क./2025-26/61 दिनांक :10.06.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
रेल सदन, चंद्रशेखरपुर, भुवनेश्वर

विषय: वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका **"धर्मपद"** के 13वें अंक की पावती प्रेषण के संबंध में।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका **"धर्मपद"** के 13वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेष रूप से:- श्री मिन्टू हालदार का यात्रा वृतांत- **'मेरी जगन्नाथ पुरी की यात्रा '**, श्री द्विति कृष्ण दाश का लेख- **'त्योहार ओडिशा के'**, श्री गोबिन्द दीप की कविता- **'आत्म प्रेम'**, सुश्री अन्नपूर्णा नायक की कहानी- **'कंटीलो और नीलमाधव की कहानी'** प्रशंसनीय हैं। कार्यालयीन गतिविधियों का छायाचित्र देख कर प्रसन्नता हुई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
Digitally signed by
Uday Pratap Singh
Date: 11-06-2025
09:56:56
(उदय प्रताप सिंह)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

P.B. No. 5329/5369, PARK HOUSE ROAD, BENGALURU 560 001.
Tel: 080-22379335 Fax: 080-22264691
https://cag.gov.in/ae/karnataka/en

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, सातवां तल, ए-ब्लॉक,
रक्षा कार्यालय परिसर, अफ्रिका एवेन्यु, नई दिल्ली - 110023
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT, DEFENCE SERVICES,
7th FLOOR, A-BLOCK, DEFENCE OFFICE COMPLEX, AFRICA AVENUE, NEW DELHI - 110023
Telephone/दूरभाष : (011) – 23094219, 23093672, 23092583, 23094669 ;
Fax: 23092301

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

1266

संख्या : ए.हिंदी/ पत्रिका/ 4941/ 2024-25 **दिनांक : 13 .06.2025**

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, उत्तर खण्ड (तीसरी मंजिल),
रेल सदन, सामंत विहार ,चंद्रशेखरपुर
ओडिशा, भुवनेश्वर-751017

विषय:- राजभाषा हिंदी पत्रिका "धर्मपद " के 13वें अंक के प्रेषण के सम्बन्ध में|

महोदय,

आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका "धर्मपद " के 13वें अंक की प्राप्ति हुई| एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं सराहनीय व प्रशंसनीय है तथा पत्रिका की साज-सज्जा अत्यंत मनमोहक है। इस पत्रिका में कर्मचारियों द्वारा यात्रा वृतांत एवं ओडिशा के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों के विषय में प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गये हैं ।

आशा है पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया
सोमवती 13.6.25
सहायक निदेशक
हिंदी अनुभाग
रक्षा सेवाएँ नई दिल्ली

आपके पत्र

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(केन्द्रीय व्यय),
ऑडिट भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट,
नई दिल्ली–110002

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL
OF AUDIT (CENTRAL EXPENDITURE),
AUDIT BHAWAN, INDRAPRASTHA ESTATE,
NEW DELHI-110002

सं.रा.भा.अ/2-9/प्रशंसा पत्र/2024-25/206

दिनांक: 17 16.07.2025

सेवा में

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (पूर्वोत्तर रेलवे),
तृतीय तल, नार्थ ब्लॉक, रेल सदन भुवनेश्वर,
भुवनेश्वर – 751017.

18 JUL 2025

विषय- हिन्दी गृह पत्रिका “धर्मपद” के 13वें अंक के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय के ई-मेल दिनांक 16.05.2025 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका **“धर्मपद”** के 13वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री विभाष चंद्र का “ओडिशा के कुछ प्रमुख पर्यटन स्थल”, श्री मनीष कुमार का “मॉं वैष्णो देवी सह कश्मीर यात्रा वृतांत”, श्रीमती नीतु चंद्रा का “चलो चलें केरल” एवं श्री बिक्रम मिश्र का “मैंने भी देखा है चिलिका झील” बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है।

इसके अतिरिक्त श्री गोबिन्द दीप की “आत्म प्रेम” एवं श्री नवीन कुमार चौबे की “चॉंद तारे गवाह आज भी” कविता पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक–मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

पूजा

सहायक निदेशक (राजभाषा)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़, रायपुर

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL
(AUDIT) CHHATTISGARH, RAIPUR

क्र.हि. क/पावती/फा-33/2025-26/जा-11

दिनांक/Date 22-05-2025

प्रति ,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर -751017 (ओड़िशा)

विषय:- वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका “**धर्मपद**” के 13वें अंक का प्रेषण।
संदर्भ :- स.- रा.भा.अ./धर्मपद/1/976447/2025 दिनांक 16-05-2025

महोदय/महोदया

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका **“धर्मपद”** के 13वें अंक की ई-पत्रिका प्राप्त हुई। पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय,

22/5/25

(यशवंत कुमार वर्मा)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

पोस्ट – विधान सभा, जीरो पॉइंट, रायपुर, छत्तीसगढ़ – 492005
Post- Vidhan Sabha, Zero Point, Raipur, Chhattisgarh – 492005
फोन/Phone: 0771-2281401 फैक्स/Fax : 2582505 ईमेल/Email : agauchhattisgarh@cag.gov.in

---

5549

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु,
361, अन्ना सलाई, तेनामपेट, चेन्नई- 600 018
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A & E), TAMILNADU,
361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI- 600 018
वेबसाइट/Website: https://cag.gov.in/ae/tamil-nadu ई–मेल/Email: agaetamilnadu@cag.gov.in
IVRS Phone No.: 044-24325050, टेलीफ़ोन नं/Phone No.: 044-24324500, फैक्स नं/Fax No.: 044-24320562

सं. हिंदी कक्ष/ Hindi Cell /प्र.प./A.L/2024-25/5549

दिनांक: 05.06.2025

सेवा में, सहायक निदेशक (राजभाषा), प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय पूर्व तट रेलवे, रेल सदन, भुवनेश्वर -751017 (ओड़िशा)	To, Assistant Director (Official Language), Office of the Principal Director of Audit East Coast Railway, Rail Sadan, Bhubaneswar -751017 (Odisha)

विषय: आपकी पत्रिका हेतु प्रतिभाव पत्र – संबंधी

महोदय/ महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका “धर्मपद” के तेरहवें अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। इस अंक में प्रकाशित ओडिशा के कुछ प्रमुख पर्यटन स्थल, पंच लिंगेश्वर, कश्मीर - धरती का स्वर्ग, हिंदी भाषा, सिटी ऑफ़ जॉय, अंडमान यात्रा, विशेष रूप से उल्लेखनीय है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,

स्वाति 3/6/25

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार,
लेखापरीक्षा (II),पश्चिम बंगाल
सीजीओ कॉम्प्लेक्स (5वीं मंजिल), डीएफ-ब्लॉक,
सेक्टर-I
सॉल्ट लेक सिटी
कोलकाता - 700 064

Supreme Audit Institution of India
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL,
AUDIT (II),
WEST BENGAL
CGO COMPLEX (5TH FLOOR), DF-BLOCK,
SECTOR-I
SALT LAKE CITY
KOLKATA – 700 064

संख्या:- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/28
No.H.C/P.P/

28 MAY 2025

दिनांक:- 28 /05/2025

सेवा में,
सहायक निदेशक/ राजभाषा
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन सामन्त विहार, चंद्रशेखरपुर,
भुवनेश्वर-751017

To,
The Assistant Director (O.L)
Office of the Pr. Director of Audit,
East Coast Railway, Rail Sadan Samant Vihar, Chandrasekharpur,
Bhubaneswar-751017

विषय: **कार्यालयीन वार्षिक हिंदी पत्रिका 'धर्मपद' के 13वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।**

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **'धर्मपद' के 13वें अंक की ई-पत्रिका** की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी वो हैं- अराकु यात्रा, चलो चलें केरल, पंच लिंगेश्वर तथा आत्म प्रेम आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

28.05.25

सहायक निदेशक (राजभाषा)/ हिंदी कक्ष

Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2334-7854, E-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं की कुछ झलकियाँ

हिंदी कार्यशाला की कुछ झलकियाँ

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए आवश्यक सुझाव

- उपस्थिति पंजी में हस्ताक्षर एवं सहकर्मियों से वार्तालाप हिंदी में करें।
- फाइलों पर विषय अनिवार्य रुप से हिंदी या द्विभाषी में लिखें।
- कंप्यूटर में यूनिकोड/देवनागरी लिपि का प्रयोग करें।
- धारा 3(3) से संबंधित कागजात हिंदी/द्विभाषी में ही जारी करें।
- हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर अनिवार्यतः हिंदी में दें।
- सभी फाइल कवर, पत्र शीर्ष, नामपट्ट, साईनबोर्ड व रबर स्टाम्प द्विभाषी में उपयोग करें।
- मानक मसौदे एवं प्रपत्र केवल हिंदी/द्विभाषी में प्रयोग करें।
- हिंदी न जानने वालों को हिंदी सीखने में सहयोग, प्रोत्साहन व मार्गदर्शन दें।